पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
(राजभाषा विभाग)

मार्च 2019

10 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में स्टेट्समैन ग्रुप ने ''द स्टेट्समैन विंटेज एंड क्लासिक कार रैली 2019'' का आयोजन किया जिसका सह-प्रायोजन हमारे बैंक द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री हितेन राठौर, स्टेट्समैन ग्रुप, से स्मृति चिह्न प्राप्त करते हुए बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस. हरिशंकर जी, साथ हैं कार्यकारी निदेशक डॉ. फरीद अहमद जी, श्री गोविंद एन डोंग्रे जी तथा मुख्य प्रबंधक कैप्टन प्रकाशचंद्र जी।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाउस', प्रथम तल, 21, राजेंद्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125

मार्च 2019

मुख्य संरक्षक

एस. हरिशंकर
प्रबंध निदेशक एवं
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

डॉ. फरीद अहमद
कार्यकारी निदेशक

श्री गोविन्द एन.डोंग्रे
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री संजीव श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक सह मुख्य
राजभाषा अधिकारी

संपादक व प्रकाशक

श्री राजीव कुमार राय
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

डॉ. नीरू पाठक
प्रबंधक
रूप कुमार
कौशलेन्द्र कुमार
राजभाषा अधिकारी

bZ&esy % hindipatrika@psb.co.in

पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रैस. 91

(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 05/05/2019)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिक एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

मुद्रक : बी.एम. ऑफसेट प्रिन्टर्स

F-16, DSIIDC, Industrial Complex,
Rohtak Road, Nangloi, New Delhi - 110041
Ph. : 011-49147897, 9811068514

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	भारत के बढ़ते कदम	4-5
5.	नराकास उपलब्धियाँ/मस्तिष्क मंथन	6
6.	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	7
7.	कुंभ मेला-विशाल हिंदू तीर्थ समागम	8-9
8.	महिला सशक्तिकरण सामाजिक उत्थान का प्रथम सोपान	10-11
9.	प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित खेल दिवस	12-13
10.	एक यात्रा-जम्बूद्वीप से भारत तक/यादें	14-16
11.	बैंक का गौरव	17
12.	उगादि- (तेलुगु रचना हिंदी रूपांतर सहित)	18-19
13.	प्रबंध कुशलता की दृष्टि से महिलाओं का महत्व	20-21
14.	पुरस्कार वितरण	22-23
15.	कार्टून कोना/ज़रा सोचिए	24
16.	ग्राहक के मुख से	25
17.	काव्य-मंजूषा	26-27
18.	राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा	28-29
19.	ऋतुराज का आगमन	30-31
20.	बैंक के विभिन्न आँचलिक कार्यालयों में खेल दिवस	32-33
21.	भविष्य निधि विभाग	34-35
22.	डिजिटल भारत	36-37
23.	अवसाद के कारण और निवारण	38
24.	हिंदी/पंजाबी कार्यशाला	39
25.	अकेली	40-41
26.	अमृता प्रीतम	42
27.	दो पेड़	43
28.	बैंकिंग और कृत्रिम बुद्धि	44

आपकी कलम से........

महोदय,

आपकी तिमाही हिन्दी पत्रिका ''राजभाषा अंकुर'' का अक्टूबर-दिसंबर 2018 अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम मैं आपको एवं पूरी संपादकीय टीम को दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा इस पत्रिका को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित होने पर बधाई देता हूं।

पत्रिका में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पर प्रकाशित आलेख काफी प्रेरणादायी और उनके जीवनवृत से जुड़ी रोचक घटनाओं और किस्सों से परिपूर्ण है। साथ ही ''भ्रष्टाचार की व्यापकता-भारत के परिप्रेक्ष्य में'' आलेख में इस प्रशासनिक और अर्थिक बुराई को काफी तथ्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। राजभाषा हिन्दी से जुड़े समस्त लेखों के साथ पत्रिका का कलेवर एवं फ्लेवर दोनों आकर्षक है। आशा करता हूं भविष्य में भी रोचक जानकारी वाले आलेखों के ''अंकुर'' प्रस्फुटित होंगे।

मनोरंजन उपाध्याय, (उप महाप्रबंधक) इलाहाबाद बैंक

महोदय,

हमें राजभाषा अंकुर सितंबर 2018 का अंक प्राप्त हुआ, इसके लिए आपको धन्यवाद! इस अंकुर पत्रिका में जो भी सामग्री प्रकाशित की गई हैं, उसमें वर्तमान बैंकिंग परिवेश व राजभाषा संबंधी जानकारी बहुत ही लाभदायक/ज्ञानवर्धक है, यह पत्रिका हमें बैंकिंग व राजभाषा संबंधी गतिविधियों से अवगत कराती है और साथ ही हम सब अपने स्टाफ सदस्यों के विचारों से भी परिचित होते हैं। यह पत्रिका अब पंजाब एण्ड सिंध बैंक की पहचान बन चुकी है। पत्रिका में हास्य कार्टून कोना और ज़रा सोंचिए में व्यक्तिगत किस्से के लिए भी जगह देकर पत्रिका को और भी रूचिकर बना दिया गया है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन संबंधी हिंदी अनुवाद जटिलता एवं समाधान विषय की जानकारी बहुत ही लाभकारी व सराहनीय हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में बैंक की गतिवधियों के समस्त छायाचित्रों का जो समावेश किया गया है वह भी अत्यंत प्रशंसनीय है। इस पत्रिका को बैंकिंग जगत के सम्मुख रखने पर पत्रिका के लेखक/संपादक मण्डल/प्रकाशक सभी को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

विनोद कुमार पांडे आँचलिक प्रबंधक, बरेली

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली पत्रिका अंकुर का नवीनतम दिसंबर-2018 का अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। बैंक में कार्य ग्रहण करने के उपरान्त मैं इस पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। यह पत्रिका मानों बैंक का प्रतिबिम्ब सी बन गई है। इस पत्रिका में बैंक की गतिविधियों, देशभर में अलग-अलग राज्यों में रहने वाले स्टाफ सदस्यों, यहाँ तक कि उनके बच्चों द्वारा लिखी गई रचनाएं, लेख, कविताएं, व्यंग इत्यादि के समावेश से पत्रिका गागर में सागर सी बन जाया करती है जिसके परिणाम स्वरूप यह पत्रिका अलग-अलग धरातलों पर अनेकों पुरस्कार अर्जित करते हुए कीर्तिमान स्थापित करती जा रही है। पत्रिका के इस नवीनतम अंक में डिजिटल बैंकिंग पर रचित लेख काफी ज्ञानवर्धक लगता है, जिससे पाठक काफी लाभान्वित होंगे। इस अंक में भ्रष्टाचार की व्यापकता पर रचित लेख भी काफी रोचक है तथा पत्रिका के सबसे निचले भाग में लिखे गए सुविचारों को बार-बार पढ़ने के पश्चात् भी मन नहीं भरता है। यह सुविचार, मानों जीवन के दैनिक पहेलूओं की सच्चाई के निकट प्रतीत से होते हैं। इस पत्रिका की बनावट, छाया-चित्र, लेखों का चुनाव तथा पत्रिका प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं की सफल योजना एवं प्रस्तुतीकरण, उच्च मुद्रण स्तर के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं।

अन्त में, मैं कामना करता हूँ कि यह पत्रिका (ज्ञान के भण्डार) भी बैंकिंग में हो रहे निरंतर बदलाव की तरह ही अपने स्वरूप में निरंतर परिवर्तन करते हुए अपने पाठकों के मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान में वृद्धि करते हुए उनके जीवन स्तर को उठाने का हरसम्भव प्रयास करे।

अमोलक सिंह खनूजा, आँचलिक कार्यालय, गुरूग्राम

आदरणीय संपादक

बैंक द्वारा प्रकाशित की जा रही तिमाही पत्रिका राजभाषा अंकुर का दिसंबर 2018 का अंक प्राप्त हुआ ,इसके लिए हम आपके प्रति आभार व धन्यवाद ज्ञापित करते है । बैंक जॉइन करने के बाद से मै इसका नियमित पाठक रहा हूँ । पिछले बीस वर्षों से पत्रिका को पढ़ने की हमारी दिवानगी इस कदर चलती आ रही है कि किसी कारणवश पत्रिका का कोई अंक हमें प्राप्त नही होता है तो हमारा प्रयास यह रहता है कि आस-पास की शाखाओं से संपर्क कर अथवा आंचलिक कार्यालय से संपर्क करके इसे प्राप्त करके पढ़ता हूँ।

पत्रिका की साज - सज्जा , कलेवर व छाया- चित्र हर एक नयापन लिए अनूठा रहता है। आपके कुशल मार्गदर्शन एवं संपादक मंडल के नवीनतम सोच के साथ उनकी मेहनत पत्रिका को पढ़कर साफ दृष्टिगोचर होती है। कुशल संपादन एवं सुंदर प्रकाशन के लिए समस्त राजभाषा परिवार को बधाई ।

हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्व विश्वास है कि आने वाले अंकों में प्रकाशित लेख इसी तरह से स्तरीय और ज्ञानवर्धक होंगे है । पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखकों को साधुवाद देते हुए एक बार फिर आपको बधाई देता हूँ।

अरविंद कुमार, शाखा प्रबंधक रोहतक

संपादकीय

साथियो,

अंकुर के माध्यम से आपसे संवाद स्थापित करना और अपने मन की बात पत्रिका के माध्यम से आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे बेहद प्रसन्नता होती है। जब यह पत्रिका आपको प्राप्त होगी तब तक नववर्ष, बसंत, होली, गुड़ी-पड़वा तथा बैसाखी जैसे त्यौहार निकल गए होंगे, इसलिए सर्वप्रथम आप सभी को नववर्ष तथा सभी त्यौहारों की बहुत-बहुत बधाई। आप सभी के सतत प्रयासों से आज के कठिन आर्थिक दौर में भी हमारा बैंक व्यवसाय वृद्धि के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने की ओर अग्रसर है, इसके लिए आप सभी के प्रयास प्रशंसनीय हैं। प्रगति के इस पथ पर राजभाषा अंकुर पत्रिका भी आंतरिक संचारक के रूप में अपने सभी रचनाकारों के सहयोग से राजभाषा हिंदी के विकास के साथ बैंक की विकास यात्रा के महत्वपूर्ण सोपानों को संजोए रखने में सदैव तत्पर रही है।

पत्रिका के प्रस्तुत अंक में राजभाषा हिंदी तथा बैंकिंग से संबंधित लेखों के साथ इस अवधि में घटित विभिन्न गतिविधियों जैसे खेल दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, राजभाषा समाचार, कार्यशालाएं संबंधित छायाचित्र अत्यंत रूचिकर तथा ज्ञानवर्धक हैं। भाषिक एकता सूत्र संयोजन की कड़ी में इस बार तेलुगु भाषा का लेख (हिंदी रूपांतर सहित)पत्रिका का विशेष आकर्षण है।

''राजभाषा अंकुर'' एक प्रयास है बैंक में हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार का। आशा है कि बैंकिंग एवं साहित्यिक विविधताओं से परिपूर्ण ''राजभाषा अंकुर'' का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका के बारे में अपनी प्रतिक्रिया हमें अवश्य भेजें, ताकि हम अपनी पत्रिका को अपने पाठकों की रुचि तथा आवश्यकतानुसार ढाल सकें।

(संजीव श्रीवास्तव)
उप महाप्रबंधक सह
मुख्य राजभाषा अधिकारी

भारत के बढ़ते कदम

कुछ ही वर्षों में हम उदारीकरण के चौथे दशक में प्रवेश करने जा रहे है। पिछले तीन दशकों में देश ने काफी प्रगति की है। इस बात की पुष्टि हेतु हमें उदारीकरण के पहले और उसके बाद में भारत की अर्थव्यवस्था और उसके विकास के तुलनात्मक अध्ययन करने पर स्पष्ट हो जाता। आजादी के पाँच दशकों तक हमारे देश की अर्थव्यवस्था के विकास की गति 5 प्रतिशत से कम ही रही है इसलिए कुछ अर्थशास्त्री इसकी आलोचना करते हुए उस समय के विकास दर को "हिन्दू विकास दर" भी कहते रहे है। परंतु उदारीकरण के बाद हमारे देश की अर्थव्यवस्था का जैसे कायाकल्प ही हो गया। वैश्विक अर्थव्यवस्था बनने के बाद भी वैश्विक पहले एशिया की संकट वर्ष 1997 ई. और उसके एक दशक बाद अमेरिकी संकट वर्ष 2008 ई. के समय भी हमारे देश का विकास दर उस दौर के विकास दर से कही अधिक ही रहा। आजादी के पाँच दशकों तक औसतन हमारे देश का विकास दर रहा है उससे लगभग दोगुना विकास दर उदारीकरण के बाद के तीन दशकों में रहा है।

उदारीकरण का पहला दशक नीतियों में लचिलापन के माध्यम से सुधारों को समर्पित रहा। देश की विकास गाथा की जो नींव नब्बे के दशक में रखी गई थी उसमें नए सहस्त्राब्दी में आकर और गति पकड़ी। हमारे देश की अर्थव्यवस्था की न केवल गति बढ़ी साथ ही इसका आकार भी कभी तेजी से बढ़ा। उदारीकरण के दूसरे दशक की समाप्ति तक हम जीडीपी के आकार के हिसाब से विश्व की दसवें- ग्यारहवें नंबर की अर्थव्यवस्था बन गए। आज जब हम उदारीकरण के तीसरे दशक की समाप्ति की दहलीज पर जब खड़े है तो एक और अच्छी समाचार हमें सुनने को मिली है कि ब्रिटेन और फ्रांस को पीछे छोड़कर हमारे देश की अर्थव्यवस्था विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई। यह हमारे देश और अर्थव्यवस्था की दृष्टि से गर्व की बात है। क्रय शक्ति समता (पीपीपी) की दृष्टि से भारत आज विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। इसी गति से हमारा विकास दर बढ़ता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हम विश्व की तीसरी सबसे प्रमुख अर्थव्यवस्था बन जाएगी। नीति आयोग के एक आकलन के हिसाब से भारत की अर्थव्यवस्था निरंतर 9–10 प्रतिशत के हिसाब से इसी तरह बढ़ती रही तो वर्ष 2030 तक हमारे देश की अर्थव्यवस्था 10 ट्रीलियन डॉलर की हो जाएगी। परंतु देश का आर्थिक विकास अगले दशक के अंत तक निरंतर रूप से 6 से 7 प्रतिशत की दर से ही अगर बढ़ी तो हमारे देश की अर्थव्यवस्था का आकार 6 ट्रीलियन डॉलर के आसपास ही सिमट कर रह जाएगी।

नेत्रानंद सेठी

परंतु वर्तमान वैश्विक संकेतों एवं देशी अर्थव्यवस्था के रुझानों को देखकर अनुमान लगाए तो इतना तय की आने वाले कुछ दशक भारत के होने वाले है। लगभग तीन दशकों से अर्थिक विकास की दृष्टि से चीन विश्व की सबसे पहले नंबर की अर्थव्यवस्था थी। परंतु ऐसा पहली बार हुआ कि भारत चीन को पछाड़ते हुए विश्व की तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन गई है।

सामाजिक अर्थशास्त्री अकसर यह बात कहते रहते है कि 19 वीं शताब्दी यूरोप की थी, तो वही 20वीं शताब्दी अमेरिका की और 21वीं शताब्दी एशिया की होगी। यह बात काफी हद तक सही साबित हो रहा है। पहले चीन अब उसके साथ कदम-से कदम मिलाकर चलते हुए भारत विश्व अर्थव्यवस्था को एक दिशा देने की कोशिश कर रहा है। या कहें कि नेतृत्व कर रहा है। एक ओर जहां वैश्विक आर्थिक वृद्धि दर 3.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है तो वही हमारे देश की अर्थव्यवस्था की औसत वार्षिक वृद्धि दर इससे दोगुना रहने का अनुमान है। छोटी अर्थव्यवस्था में उच्च विकास दर निरंतर बनाए रखना बड़ी अर्थव्यवस्था के मद्देनजर आसान रहता है। परंतु जब किसी देश की अर्थव्यवस्था बड़ी हो जाती है तब उसको सदैव उसी गति से बढ़ते रखना सर्वथा मुश्किल रहता है। चीन को छोड़कर विश्व की दस बड़ी अर्थव्यवस्था के पिछले दशकों की वृद्धि का अध्ययन करने पर यह बात सिद्ध हो जाती की विश्व की इन सभी अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर औसतन तीन प्रतिशत से भी कम रही है।

हमारे देश की अर्थव्यवस्था के निरंतर उच्च गति से बढ़ाने का यह परिणाम हुआ है कि उदारीकरण के तीसरे दशक विश्व के सभी विकसित

एवं विकासशील देश हमारे देश की अर्थव्यवस्था का लोहा मानना शुरू कर दिया। जीडीपी विकास के मामले में हमारा मुख्य प्रतिस्पर्धी सिर्फ चीन ही रहा है। पिछले तीन चार दशकों में चीन ने उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है। अपने साधन, सामर्थ्य और संभावना का समुचित सदुपयोग करते हुए चीन आज विश्व महाशक्ति बन चुका है। भारत के पास भी आज उसी तरह का मौका प्राप्त हुआ है। जनसंख्याकी लाभांश का लाभ उठाते हुए इसका सही दिशा में सदुपयोग हम कर सकते हैं।

उदारीकरण की आलोचना करने वाले अक्सर यह कहते हुए दिख जाएंगे की इसका लाभ देश के अंतिम आदमी तक पहुंचने में या तो काफी देर लग जाती। कुछ हदतक वे सही हो सकते है। कुछ वर्ष पूर्व तक देश में बैंकिंग, बीमा आदि सुविधाओं से अधिकांश लोग आर्थिक सुविधाओं से महरूम थे। आज इतने बड़े देश जहां 130 करोड़ से अधिक लोग निवास करते है वहाँ विधिव आर्थिक सुविधाओं को पहुंचने में वक्त लगना स्वाभाविक है। पिछले वर्षों में वित्तीय समावेशन हेतु चलाए गए मिशन के द्वारा न केवल देश के सभी नागरिकों को वित्तीय सुविधाएं प्रदान करने में हम सफल रहे है साथ ही बीमा, पेंशन आदि इनसे जुड़ी अन्य आर्थिक सुविधाओं की पहुंच देश के जन-जन तक पहुंचने का प्रयास किया जा रहा है। बैंकिंग, बीमा, पेंशन आदि आर्थिक चीज़ों तक देश के सभी नागरिक की पहुंच हो तभी हम समावेश समाज बन सकते है। हम इन्हें लोगों के मौलिक अधिकार से जोड़कर देखते है। आने वाले वर्षों में इन सभी सुविधाओं का और भी ज्यादा लोकतांत्रिक करण करके इसे जन-जन तक पहुंचाना है। हमें इस तरह के मिथक को अतिशीघ्रह तोड़ने की आवश्यकता है जिसके माध्यम से यह भ्रम बनाया जाता रहा है कि कुछ सुविधाओं की पहुँच कुछ विशिष्ट लोगों तक ही रहेगी। हमारी यह भावना है कि जब हम उदारीकरण के पांचमें दशक में पहुंचे तब तक इन सभी मूलभूत सुविधाओं की पहुंच देश के सभी निवासी तक आसानी से पहुंचे।

उदारीकरण के बाद देश में शहरीकरण की प्रक्रिया काफी तेजी से बढ़ी है। जिसका मुख्य कारण रोजगार एवं शिक्षा के केंद्र में शहर रहा है। देश के अन्य भागों में बुनियादी सुविधायों का अभाव रहा है जिसके चलते देश के अन्य भागों से शहरों की तरफ पलायन काफी तेज गति से हुआ है। इसके कारण शहरों पर जनसंख्या का दबाव काफी बढ़ गया है। संसाधन के सीमित होने के चलते मांग एवं आपूर्ति की भारी असमानता हमें देखने को मिलती है। इस कारण से शहर में रहने वाले भी अधिकांश लोगों का जीवन स्तर में अपेक्षित मापदंड से भी कम है। तो वही उदारीकरण के बाद एक तरफ जहां उच्च वर्ग काफी धनी होता गया है तो वही निम्न एवं निम्न मध्य वर्ग के लोगो के जीवन स्तर एवं आय में उस अनुपात में वृद्धि नहीं हुई। उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग में असमानता की खाई काफी चौड़ी होती गई। इतनी तेज गति से विकास करने के बावजूद आज हमारे देश में प्रति व्यक्ति वार्षिक औसतन आय अब भी डेढ़ लाख रुपए से कम है। एक अनुमान के अनुसार देश के तीन-चार प्रतिशत सबसे अमीर लोग और देश के अंतिम पायदान पर खड़े लोग के बीच आय में असमानता बढ़कर 1:1,000,000 से ज्यादा हो गई है। हमें इस गैप को कम करना है। यह तभी संभव हो पाएगा जब हमारे देश की आर्थिक प्रगति निरंतर उच्च गति से बढ़ती रहें।

> एक अनुमान के अनुसार देश के तीन-चार प्रतिशत सबसे अमीर लोग और देश के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों के बीच आय में असमानता बढ़कर 1:1,000,000 से ज्यादा हो गई है। हमें इस गैप को कम करना है।

विश्व के उभरते महाशक्ति के रूप में न केवल देशवासियों को अपितु विश्व को भी हमसे अपेक्षा बढ़ गई है। इन अपेक्षाओं की पूर्ति करने हेतु हमारे देश की वित्तीय पोषण करने वाली सस्थाओं को भी मजबूत करने की जरूरत है। देश में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का विलय कर बड़े-बड़े बैंकों का गठन संभवत : इसी परिप्रेक्ष्य में किया जा रहा है। उदाहरण स्वरूप हम देख सकते है कि आने वाले पाँच-छः वर्षों में देश के आधारभूत संरचना में पच्चीस लाख करोड़ से अधिक का निवेश होने कि संभावना है इसी तरह अन्य क्षेत्रों में भारी निवेश की संभावना आने वाले वर्षों में हम देख पाएंगे। इन बड़े निवेश हेतु फंड उगाही करने एवं विदेशी आर्थिक संस्थाओं के साथ देशी आर्थिक संस्थाओं की भूमिका महती बन गई है। छोटे आकार के बैंकों एवं वित्तीय सस्थाएँ इस तरह के बड़े-बड़े निवेश करने हेतु अनुपयुक्त साबित हो रहे थे। बदलते आर्थिक परिदृश एवं में विश्व की सबसे युवा देश होने के कारण हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि उदारीकरण के छटवें दशक के अंत में जब हम अपने देश की आजादी के 100वर्ष मना रहें होंगे तक तक हम विश्व की तीसरे नंबर के अर्थव्यवस्था बन जाएंगे। हमसे ऊपर विश्व की केवल दो आर्थिक महाशक्ति अमेरिका और चीन मात्र बचेंगे। वह दिन सभी देशवासी के लिए गर्व का दिन होगा।

महाप्रबंधक, योजना एवं विकास विभाग

नराकास उपलब्धियाँ

आगरा बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा हमारे बैंक की शाखा हींग की मंडी, आगरा को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। चित्र में उपनिदेशक (राजभाषा कार्यान्वयन) गाजियाबाद, शाखा के मुख्य प्रबंधक श्री बरहम कुमार को पुरस्कार देते हुए। साथ हैं केनरा बैंक के उप-महाप्रबंधक श्री दलजीत सिंह व हमारे बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री तिरलोचन सिंह।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आँचलिक कार्यालय बरेली को सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए तृतीय पुरस्कार मिला। आँचलिक प्रबंधक बरेली श्री विनोद कुमार पाण्डेय को शील्ड प्रदान करते हुए नराकास अध्यक्ष श्री सतीश कुमार अरोड़ा।

मस्तिष्क मंथन

शाखा एम. पी. नगर, भोपाल में मस्तिष्क मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। चित्र में शाखा के स्टाफ - सदस्यों के साथ राजभाषा प्रबंधक श्री देवेन्द्र कुमार दृष्टव्य हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

प्रधान कार्यालय द्वारा 08 मार्च 2019 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस. हरिशंकर जी द्वारा की गई। समारोह में कार्यकारी निदेशक डॉ.फरीद अहमद जी तथा श्री गोविंद एन.डोंग्रे जी तथा अन्य उच्चाधिकारियों ने विशेष रूप से अपना सानिध्य प्रदान किया। इस अवसर पर महिलाओं ने रंगोली बनाई। सुश्री पारुल ने मंच का संचालन किया। सुश्री प्रेरणा ने सरस्वती वंदना की तथा सुश्री डॉ.नीरू पाठक ने महिला कार्मिकों को संबोधित किया।

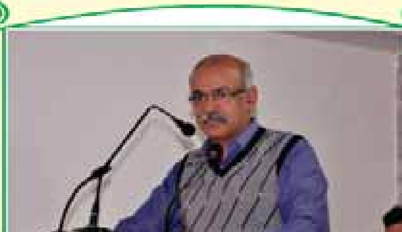

कुंभ मेला-विशाल हिंदू तीर्थ समागम

संजीव श्रीवास्तव

संस्कृति मानव सभ्यता के जीवंतता का प्रतीक है। संस्कृति से ही किसी राष्ट्र अथवा मानव समुदाय के गुण, आचार-विचार और व्यवहार, आदर्श तथा अभिलषित जीवन मूल्यों का संकेत प्राप्त होता है। संस्कृति शब्द संस्कृत के 'संस्कार' शब्द से बना है। ऐसा कहा जा सकता है जो विश्व में वरण करने योग्य है, वही संस्कृति है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की ख्यातिनाम पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' की भूमिका में पं. नेहरु कहते हैं- संसार भर में जो भी सर्वोत्तम बातें जानी या कही गई हैं, उनसे अपने आप को परीचित करना ही संस्कृति है। भारत पूरे विश्व में अपनी सांस्कृतिक धरोहरों के लिए जाना जाता है। हजारों वर्षों से काल के प्रवाह में

प्रवाहित भारतीय संस्कृति आज भी लोगों की आध्यात्मिक तृष्णा को शमित कर रही है। 'वसुधैव कुटुंबकम', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के नारे से इस धरा पर रह रहे सभी लोगों को एक परिवार मान सभी के लिए सुखी रहने की कामना व्यक्त की गई है। हम मानव जिस भी रुप में अपने परमात्मा को जानना-समझना और पूजना चाहते हैं, भारतीय संस्कृति में सबका समाहार है। भारत में नदियों, वट, पीपल जैसे वृक्षों, सूर्य तथा अन्य प्राकृतिक देवी-देवताओं की पूजा करने का क्रम शताब्दियों से चला आ रहा है। भारतीय संस्कृति की सभी छटाओं को, सभी विशिष्टताओं को एक साथ देखने का सर्वोत्तम मौका है- 'कुंभ मेला'। प्रकृति और मनुष्य के मध्य बने अध्यात्म रूपी सेतु पर कुंभ का मेला लगता है। यह एक विशाल हिंदू तीर्थ समागम है। नदियों को पवित्र मान उसके प्रति आस्था रखना, एक समुदाय के रुप में अपनी पहचान बनाना और फिर इसे अध्यात्म के दर्शन से व्याख्यायित करना, कुंभ मेले की मूल विशेषता है। हम अगर गौर करें तो यह पाएंगे कि हम भारतीयों की महत्वपूर्ण गतिविधियां अकारण ही नहीं होती। सबके पार्श्व में कोई न कोई कारण अथवा इतिहास होता है। प्रस्तुत आलेख में कुंभ के स्वरुप, उसकी पौराणिकता तथा ऐतिहासिकता के बारे में चर्चा की जाएगी।

कुंभ मेला एक विशाल हिंदू तीर्थ समागम है जिसमें लोग पवित्र नदी में स्नान करते है। परंपरागत रुप से चार मेलों को कुंभ का नाम दिया गया है- प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक, त्र्यंबकेश्वर सिंह स्थान एवं उज्जैन। इन चार स्थानों पर ये क्रमशः होता है। ये मेला नदी के तट पर लगता है। हरिद्वार में गंगा, प्रयाग में गंगा-यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर, नासिक में गोदावरी और उज्जैन में शिप्रा नदी तट पर यह मेला लगता है। ऐसी मान्यता है कि इन नदियों में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं। किसी एक स्थान पर यह मेला 12 वर्ष के अंतराल के पश्चात लगता है। हरिद्वार और नासिक में लगने वाले कुंभ के मध्य का अंतराल 3 वर्ष होता है, नासिक और उज्जैन में यह एक ही वर्ष में होता है या एक वर्ष के अंतराल पर। तिथियों का निर्धारण विक्रमी संवत् ज्योतिष के नियमों को अनुसार होता है। नासिक और उज्जैन में जब बृहस्पति सिंह राशि में होते हैं तब कुंभ वहां आयोजित किया जाता है। इसलिए इसे सिंहस्थान कुंभ भी कहते हैं। हरिद्वार तथा प्रयाग में छः वर्ष के अंतराल पर अर्धकुंभ लगता है। कुछ अन्य स्थान भी है जो कुछ कम जाने जाते हैं, जिन्हें कुंभ मेला के साथ जोड़ा जाता है। महामहम्, कुंभकोणम जो हर 12 वर्ष पर लगता है और अन्य स्थान है- कुरुक्षेत्र तथा सोनिपत।

इस मेले का प्रादुर्भाव कब हुआ, इसका सटीक अनुमान लगाना कठिन है। मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु ने चार स्थानों पर अमृत की बूंदे गिराई थी। जमीन पर जिन स्थानों पर ये बूंदे गिरी थी उन्हीं चार स्थानों पर आज कुंभ लगता है। ये मेला विश्व के सबसे विशाल शांतिप्रिय समूह के रुप में है, यद्यपि इसमें कितने लोग आते हैं तथ्यात्मक रुप से इसका अनुमान लगा पाना कठिन है। ऐसा कहा जा रहा है कि इस वर्ष लगने वाला कुंभ अब तक का सबसे बड़ा कुंभ है। सरकारी आकड़ों के अनुसार लगभग 15 करोड़ से अधिक लोग इसमें शामिल हुए। सबसे अधिक भीड़ मौनी अमावस्या के दिन हुई थी। कुंभ शब्द के शाब्दिक अभिप्राय से आप सभी परिचित है। एक परंपरा इसे समुद्र मंथन से जोड़ती है। परंतु इसका उल्लेख प्राचीन पुस्तकों से लेकर दशवीं शताब्दी की पुस्तकों तक नहीं मिलता। एक परंपरा यह भी कहती है कि कुंभ की अमृत बूंदे धनवंतरी ऋषि जो कि

देश के किसी राज्य की प्रथम महिला मुख्यमंत्री – सुचेता कृपलानी

देवताओं के वैद्य हैं, उनके द्वारा अमृत कुंभ ले जाते हुए, चार स्थानों पर दूतों के द्वारा अमृत गिराया गया। दूत इंद्र तथा गरुड़ थे। इसलिए इसे अर्वाचीन विचारकों ने तुलनात्मक रुप से बहुत बाद की परंपरा का माना है। ऐतिहासिक रुप से इसका प्रथम वर्णन चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा 644 ई. में किया गया। हालांकि प्रयाग में बहुत पहले से ही माघ मेला का आयोजन बिना कुंभ का नाम दिए किया जाता रहा है। इसका वर्णन कई पुराणों में भी किया गया है। मैकलियन के अनुसार प्रयाग वाले ब्राह्मणों ने ही माघ मेला को कुंभ का नाम दिया है। कुंभ मेले में अखाड़ों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। अखाड़े प्रारंभ हुए थे मुस्लिम आक्रांताओ द्वारा अपने धर्म की रक्षा हेतु लड़ाकू सैनिकों को तैयार करने के लिए। यह एक रक्षात्मक पद्धति थी। जिसका महत्व अंग्रेजों के राज में खत्म हो गया था। ये अखाड़े ही पहले कुंभ का आयोजन किया करते थे। वे कर भी लेते थे और व्यवसाय भी करते थे। यहां का व्यापार भी से साधु ही करते थे। सन् 1760 में हरिद्वार में कुंभ मेला में शैव तथा वैष्णव वैरागियों में भीषण रक्तपात हुआ तथा इसमें सैकड़ों की संख्यां में लोग मारे गए। मराठा पेशवा के अभिलेख के अनुसार करीब 12000 लोग मारे गए। तदन्तर स्नान करने के क्रम में भी झगड़े हुए। 1796 ई. में उदासी और गोसाइयों के मध्य में युद्ध हुऐ जिसमें खालसा सिख उदासियों के साथ थे। इसमें 500 गोसाइसों तथा 12 उदासी मारे गए।

कंपनी की स्थापना के बाद साधुओं का व्यापारी व योद्धा स्वरुप विलीन हो गया वे अधिकांशतः भीख मांगने लगे। सन् 1824 हरिद्वार के अर्धकुंभ में जान चेंबरलीन के अनुसार हर धर्म के लोगों ने इसमें हिस्सा लिया जिसमें सिख भाई बड़ी संख्या में थे। कुंभ में हिस्सा लेने विदेशी व्यापारी, बुखारा, तुर्कमिनिस्तान, अरब, काबुल, पर्शिया से आया करते थे तथा राजा महाराजा भी इसमें हिस्सा लेते थे। कई बार भीड़ में भगदड़ भी मच जाती थी।

प्रयाग का महाकुंभ सबसे विशाल होता है। 2019 में अस्थाई नगर के रूप में बसा दिया गया है जोकि 25000 हेक्टेयर में,122000 शौचालय, हर प्रकार के रहने की व्यवस्था है। डॉरमेटरी से लेकर पांच सितारा टैंट तक की व्यवस्था है। इसके लिए 800 विशेष ट्रेन चलाई गई हैं। विडियो से सुरक्षा, स्वास्थ्य प्रबंध की व्यवस्था है। तीर्थ यात्रियों का विशेष एप के जरिए भी मार्गदर्शन किया जा रहा है। यह अत्यंत मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता है। प्रयाग में कल्पवास का भी आयोजन होता है जोकि पूरे माघ महीने में संगम के किनारे पूजा करते हुए बीतता है। यह वहां आयोजित किया जाता है जहां श्री राम ने भारद्वाज ऋषि के आश्रम में शिक्षा ग्रहण की थी। यह क्षेत्र राजा ययाति के द्वारा शासित था जो कि कुरु वंश के पूर्वज थे। ऋगवेद में भी प्रयाग का वर्णन तीर्थ के रुप में किया गया है।

नासिक में पहले यह त्र्यंबकेश्वर में होता था। बाद में मराठाओं ने इसे नासिक के रामकुंड में स्थानांतरित कर दिया। लेकिन शैव अभी भी त्र्यंबकेश्वर को ही मानते हैं। कुरुक्षेत्र एवं सोनीपत में सूर्यग्रहण पर जो मेला लगता है उसे भी कुंभ का नाम दिया जाता है। हरिद्वार में गंगा के तट पर जब गुरु कुंभ राशि में ,सूर्य मेष राशि में होता है, चैत्र माह में मनाया जाता है। प्रयाग में गंगा-यमुना-सरस्वती के संगम पर गुरु वृश्चिक राशि में और सूर्य तथा चंद्र मकर राशि में या गुरु वृष में और सूर्य मकर में हो तब मनाया जाता है, माघ के महीने में। त्र्यंबकेश्वर में गोदावरी के तट पर जब गुरु सिंह में या गुरु सूर्य और चंद्र में कर्क में हो तब मनाया जाता है। ये भाद्र मास(अगस्त-सितंबर) में मनाया जाता है। उज्जैन में जब गुरु सिंह तथा सूर्य मेष में हो, गुरु सूर्य और चंद्र तुला में हो(कार्तिक अमावस्या), कुंभ लगता है। इसे वैसाख माह में मनाते हैं।

शाही स्नान पेशवाई जुलूस के रुप में जाता है। जूना अखाड़ा, निरंजनी और महानिर्वाणी अखाड़े क्रम से जाते हैं तथा शेष बाद में जाते हैं। मेले में प्रवचन, कीर्तन, महाप्रसाद, शास्त्रार्थ इत्यादि का आयोजन होता है। मेले में दर्शन का भी लाभ मिलता है। साधु-सन्यासियों के विचार, इनकी भक्ति-धारा से सभी को लाभ मिलता है। मार्क ट्रेनर ने 1895 में लिखा था- It's the wonderful power of faith like that can make multitude upon multitudes of both old and weak and young and frail enter without hesitation and complain upon such incredible journeys and endure the resultant measures without repining- No matter what the impulse is the act born of it is beyond imagination and marvelous- यहां सहज ही देखा जा सकता है कि कुंभ मेलें में लोग बिना किसी निमंत्रण के दूर दूर से चले आते हैं। आज जिस तरह की व्यवस्था होती है, पहले ऐसी व्यवस्था नहीं होती थी फिर भी लोग बिना किसी शिकायत के, बिना थकावट के कुंभ में सहर्ष सहभागिता करते थे। यह हम भारतीयों की अध्यात्म के प्रति आकर्षण व प्रकृति के प्रति हमारी आस्था को प्रदर्शित करता है। आज विश्व का हर बौद्धिक व्यक्ति मानव जीवन में भैतिकवाद के बढ़ते हस्तक्षेप के कारण चिंतित है। यह भौतिकवाद का ही दुष्परिणाम है कि मनुष्य भौतिकता के नित्य नई ऊचाइयों को छू रहा है परंतु भीतर ही भीतर चिंतित, कुंठित व व्यथित भी हो रहा है। जीवन-मूल्य के प्रति उसकी आस्था भीतर ही भीतर टूटती चली जा रही है। वह अकेला होता चला जा रहा है। आधुनिकता की ऐसी परिस्थिति में कुंभ का महत्व बढ़ता ही चला जा रहा है। दैनिक जीवन की गतिविधियों के मध्य कुछ समय के लिए अवकाश लेकर, इस समय को स्वयं की तथा परमात्मा की अनुभूति में लगाना कुंभ का एक प्रमुख ध्येय है। अध्यात्म का आकर्षण भारतीय संस्कृति की एक प्रमुख पहचान रही है। कुंभ के मेले में लाखों लाख लोगों के शांतिपूर्ण समायोजन की ऐसी अद्भुत छटा भारतीय संस्कृति में ही देखी जा सकती है। भारत में जब भी कहीं कुंभ लगता है पूरे विश्व की नजर इसी मेले पर होती है। यह विश्व के अन्य देशों के लिए आश्चर्य का विषय है कि बिना किसी बुलावे के, बिना किसी निमंत्रण के इतने सारे लोग एक स्थान पर, तय तिथि पर कैसे इकट्ठे हो जाते हैं। सच पूछा जाए तो हमारी संस्कृति का स्वरुप ही ऐसा है कि पूरा विश्व अपनी आदिम अवस्था से अभी तक इससे प्रभावित होता रहा है। कुंभ भारत को, भारतीयता को व भारतीय संस्कृति को वास्तविक अर्थों में अभिव्यक्त करता है। कुंभ में प्रेम है, आस्था है, भक्ति है, सामूहिकता है, रोजगार है, व्यापार है, अपने मूल्यों को बनाए रखने का संस्कार है।

उप महाप्रबंधक, खुदरा ऋण विभाग

महिला सशक्तिकरण सामाजिक उत्थान का प्रथम सोपान

समाज क्या है? विभिन्न पारिवारिक इकाइयों का सम्मिलित एवं बृहद रूप। महिला किसी भी परिवार की धुरी होती है। परिवार के कुशल संचालन में पुरुषों से कहीं अधिक योगदान महिलाओं का रहता हैं। हम प्रायः महिला सशक्तिकरण की चर्चा करते हैं। परंतु यह नई पीढ़ी की कोई सोच है या कोई विचारधारा? इस विषय पर हम यहाँ विचार करेंगे।

संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ) की परिभाषा के अनुसार महिला सशक्तिकरण के निम्लिखित पाँच प्रमुख घटक हैं।

1) नारी का स्वयं अपने महत्व को पहचानना।
2) अपने जीवन यापन के विकल्प स्वयं निश्चित करने का अधिकार
3) अवसर एवं संसाधन तक पहुँच का अधिकार
4) अपने जीवन/ कार्यक्षेत्र, में नियंत्रण का अधिकार
5) समाज की बेहतरी के लिए, सामाजिक एवं आर्थिक संतुलन लाने के लिए, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने का अधिकार।

अर्थात महिला सशक्तिकरण भौतिक, आध्यात्मिक, मानसिक तथा शारीरिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक सभी स्तरों पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है।

पिछले एक- दो दशकों में निश्चित रूप से परिवार एवं समाज के स्तर पर काफी बदलाव आया है लेकिन लैंगिक समानता की दृष्टि से देखे तो अभी भी हमें परिवार एवं समाज के स्तर पर काफी बदलाव लाने की आवश्यकता हैं। परंतु महिलाओं के श्रम (पारिवारिक कार्य) का कोई आर्थिक मूल्य नहीं होने के चलते परिवार में पुरुषों के बराबर स्थान नहीं मिल पाता। सामाजिक सुधार का गीत हमें नवजागरण काल से ही सुनाई देना शुरू हो गया था। सामाजिक स्तर पर महिलाओं के साथ लंबे समय चल रही कई कुरीतियों से हमें मुक्ति मिली थी। 19वीं सदी के प्रारंभ में शुरू हुए इस मुहिम को आजादी के बाद और गति देने की कोशिश की गई। संविधान बनाने के क्रम में हमने दूरदर्शिता दिखते हुए महिलाओं को भी पुरुषों के बराबर अधिकार दिए। उस समय हम कुछ चुनिंदा देशों की श्रेणी में थे जिन्होंने महिलाओं को भी पुरुषों के बराबर कानूनी अधिकार दिए थे। हमारे संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 17, 19, 21, 23, 24, 39(ए), 44 एवं अनुच्छेद 325 स्त्री एवं पुरुषों के समान अधिकारों की पुष्टि करते हैं। इसके बाद भी समय- समय पर आवश्यकता अनुसार महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए संसद द्वारा कानून बना कर उन्हें कानूनी अधिकार भी दिए गए हैं जिसमें से कुछ अधिनियम निम्नलिखित हैं- अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम 1956, दहेज रोक अधिनियम 1961, एक बराबर पारिश्रमिक एक्ट 1976, मैडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रैगनैन्सी -1987, लिंग परीक्षण तकनीक (नियंत्रक और गलत इस्तेमाल के रोकथाम) एक्ट 1994, घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम, 2005, बाल विवाह रोकथाम एक्ट 2006, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन शोषण एक्ट 2013 आदि कई महत्वपूर्ण कानून बने है। इन कानूनों के बनने के बाद महिलाएं निश्चित रूप से सशक्त हुई हैं। इन सब कानूनों का उद्देश्य था सामाजिक उत्थान। कहा भी गया है कि यदि किसी समाज को शिक्षित करना है तो उसकी महिलाओं को शिक्षित करो। विकास काफी हद तक शिक्षा पर निर्भर करता है।

गोपाल कृष्ण

हम सिर्फ कानूनी प्रावधानों के माध्यम से आधी आबादी को सशक्त नहीं कर सकते हैं। सिर्फ कानूनी आधिकार दे देने से ही महिलाएं सशक्त नहीं हो सकती हैं। कानून के डंडे से हम महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को आंशिक रूप से ही लागू करवा सकते हैं। जब तक हम सामाजिक/ पारिवारिक स्तर पर जन-जागृति पैदा नहीं करते तब तक महिला सशक्तिकरण की बात बेईमानी ही साबित होगी।

महिला सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया हैं। जिसमें हम महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक परिस्थितियों की तुलना पुरुषों को मिलने वाले इन अधिकारों से करके देखते हैं। कुछ शिक्षित एवं शहरी महिलाओं को छोड़ दे तो देश की आधिकांश महिलाओं को पुरुषों के बराबर अभी भी अवसर नहीं मिल पा रहा है। हम ऐसा नहीं कह रहे है कि महिलाओं के प्रति हमारे समाज में चल सदियों से चल कुंठित सोच और कुत्सित मानसिकता में बदलाव नहीं आया है। परंतु इस बदलाव की गति काफी धीमी रही है। इसके लिए हमारी पितृसत्तात्मक सामाजिक पद्धति एक महत्वपूर्ण कारक हैं। हमारे देश में यह अत्यधिक जटिल ताने-बाने के साथ उपस्थित है, जिसमें सभी जाति, वर्ण, वर्ग और धर्म सम्मिलित हैं। इसलिए

महिला सशक्तिकरण सिर्फ किसी एक जनपद, प्रदेश का विषय न होकर अखिल भारतीय विषय है। इसके लिए हमें चतुर्दिक प्रयास करने की आवश्यकता है। तभी हम अपनी आधी आबादी को न्याय दिला सकते है। यह कहने में हमें कतई गुरेज नहीं है व्यक्तिगत प्रयासों से हमने कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की है। जिन्हें हम अपना प्रतीक बनाकर चल रहे है। प्रेरणा और प्रोत्साहन के लिए ऐसे प्रतीकों की आवश्यकता हमारे जीवन में नितांत आवश्यक है। आज हम गर्व से कह सकते है कि देश में सभी महत्वपूर्ण पदों को महिलाएं सुशोभित कर चुकी है। ज्यों-ज्यों उसे अवसर प्राप्त हो रहा है वह अपने आपको साबित भी कर रही है। बड़े शहरों में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अवसर मिल रहा है परंतु आधारभूत संरचना और सामाजिक सोच के ओछीपन के कारण छोटे शहरों एवं ग्रामीण इलाकों में उन्हें समान अवसर अभी भी प्राप्त नहीं हो पा रहा हैं।

आजादी के बाद सरकार के द्वारा महिला सशक्तिकरण को ध्यान में रखते हुए सैकड़ों कार्यक्रमों तथा योजनाओं की रूपरेखा बनी, उसमें से कईयों को अमली जामा भी पहनाया गया है। आजादी के बाद पहले तीन दशकों तक "महिला कल्याण" की शब्दावली का प्रयोग आमतौर पर किया जाता रहा है। 80 दशक में महिला कल्याण के स्थान पर "महिला विकास" की शब्दावली प्रयुक्त होने लगी, कालान्तर में 90 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में "महिला समानता" या उन्हें बराबरी के हक दिलाने पर जोर देने की बात की जाने लगी। 90 के दशक के अंतिम चरण में और विशेषकर 21 वीं शताब्दी में प्रवेश करते ही चारों ओर महिला सशक्तिकरण का स्वर तेज होता गया। जो आज भी मुखर है।

उदारीकरण से हमारे आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक वातावरण पर काफी सकारात्मक बदलाव आया है। साथ ही कानूनी प्रावधानों के क्रियान्वयन एवं निर्माण हेतु सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था (न्यायपालिका/ कार्यपालिका) काफी सक्रियता दिखा रही है। महिला सशक्तिकरण हेतु इसे हम आदर्श परिस्थिति तो नहीं कह सकते है परंतु यह काफी हद तक अनुकूल परिस्थिति जरूर है।

आज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएं अपनी एक स्वतंत्र पहचान बना रही हैं। "ग्लास सीलिंग" के मिथक को तोड़ते हुए आज महिलाएं अपने दम पर सभी क्षेत्रों में अपना परचम लहरा रही हैं। चाहें तो महिलाएं क्या नहीं कर सकती। अपने कर्तव्य के सम्मुख जान की परवाह किए बिना वे आगे बढ़ती जाती है और कल्पना चावला की तरह देश का सर ऊंचा कर सकती है। वे सावित्रीबाई फुले की तरह प्लेग रोगियों की सेवा करते प्राण न्यौछावर कर सकती है या साहस एवं त्याग की मूर्ति मदर टरेसा की तरह मानव मात्र को सुकून देने का भरसक प्रयत्न करती हैं, जिन्होंने कोढ़ियों के घावों पर मलहम पट्टी करने से भी परहेज नहीं किया।

देश में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सामाजिक, राजनीतिक स्तर पर हो रहे इन प्रयासों के बावजूद कुछ कुंठित मानसिकता के लोग अभी भी है। सबसे पहले हमें समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाली राक्षसी सोच (दहेज प्रथा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बलात्कार, वैश्यावृति, मानव तस्करी, अशिक्षा आदि) को मारने की जरूरत है तभी हम आधी आबादी को न्याय दिला पाएंगे और सशक्त कर पाएंगे। लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अंतर ले आता है जो देश को पीछे की ओर ढ़केलता है। भारत के संविधान में उल्लिखित समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना ही पड़ेगा। लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। महिला सशक्तिकरण को शत-प्रतिशत प्राप्त करने के लिए हमें इसे हर एक परिवार में बचपन से प्रचारित व प्रसारित करना चाहिए। जिससे न केवल सामाजिक चेतना का विस्तार होगा बल्कि कुछ कुंठित मानसिकता के लोग समाज में अभी भी विद्यमान है उनका महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण भी बदलेगा।

महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया तब तक अधूरी रहेगी जब तक पुरुष भी महिलाओं के साथ कंधे से कंधे मिलाकर नैतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक रूप से पूर्ण आस्था के साथ इस मुहिम से जुड़ न जाए। अन्यथा हमें महिला सशक्तिकरण की राह में खड़े चुनौतियों से लड़ने में पूर्ण सफलता नहीं मिल सकती।
किसी ने सत्य ही कहा है

"हटा दों सब बाधाएं मेरे पथ की
मिटा दो आशंकाएँ सब मन की
जमाने को बदलने की शक्ति को समझो
कदम से कदम मिलाकर चलने तो दो मुझको "

उपमहाप्रबंधक
आँचलिक कार्यालय-II, नई दिल्ली

देश की प्रथम महिला राजदूत – विजयलक्ष्मी पंडित

बैंक के प्रधान कार्यालय ने खेल दिवस का आयोजन किया जिसमे विभिन्न प्रतियोगिताओं का उच्चाधिकारियों एवं प्रधान कार्यालय के स्टाफ सदस्यों एवं उनके परिवार जन ले भी भाग लिया।

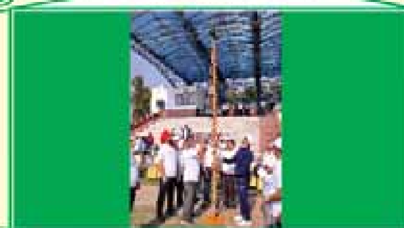

आयोजन किया गया। बैंक के कार्यकारी निदेशक डॉ. फरीद अहमद जी, श्री गोविंद एन. डोंग्रे जी, अन्य प्रस्तुत हैं विभिन्न खेलों की झलकियाँ।

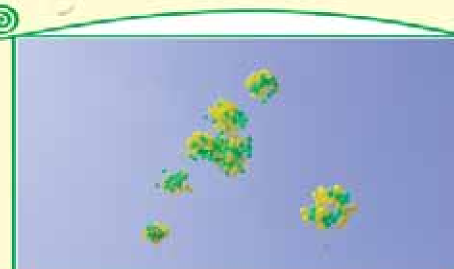

एक यात्रा-जम्बूद्वीप से भारत तक

राजेंद्र कुमार

रहस्यों को जानने की प्रवृति मानव की प्रकृति है। रहस्यवाद एक भावनात्मक अभिव्यक्ति है, जिसमें मनुष्य ने अलौकिक तथ्यों को खोजने तथा उजागर करने का प्रयास किया है। रहस्यवाद हिंदी साहित्य का अभिन्न अंग रहा है, क्योंकि हिंदी रचनाकारों ने रहस्यवाद अर्थात प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से उस अलौकिक सत्ता को उजागर करने का प्रयत्न किया है। इसी रहस्यवाद से प्रेरित होकर मेरे मन में भारतवर्ष की परिकल्पना को लेकर तीव्र उत्कंठा पैदा हुई। वैसे तो वैज्ञानिकों ने भारत की उत्पत्ति को लेकर कई खोजें की है। इस संबंध में मैंने भी जानकारी एकत्रित करने का प्रयास किया और इस प्रक्रिया में जो कुछ अल्पज्ञान अर्जित कर पाया उसे कलमबद्ध करने का प्रयास यहां पर किया है।

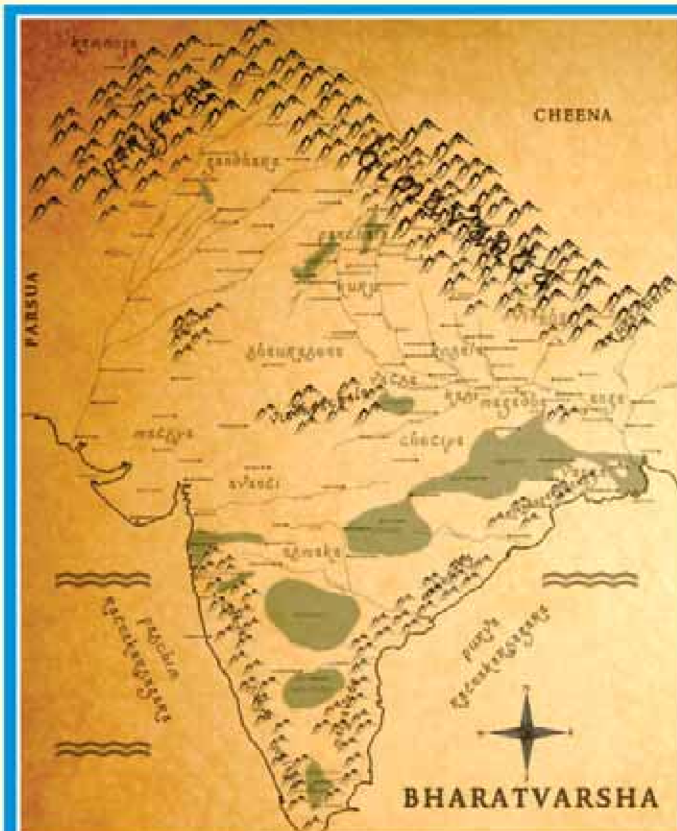

ऐसा बताया जाता है कि प्रथम जीव की उत्पत्ति धरती के पेंजिया भूखंड के काल में गोंडवाना भूमि पर हुई थी। गोंडवाना महाद्वीप एक ऐतिहासिक महाद्वीप था। भू-वैज्ञानिकों के अनुसार लगभग 50 करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी पर दो महाद्वीप ही थे। उक्त दो महाद्वीपों को वैज्ञानिकों ने दो नाम दिए। एक का नाम था 'गोंडवाना लैंड' और दूसरे का नाम 'लॉरेशिया लैंड'। गोंडवाना लैंड दक्षिण गोलार्ध में था और उसके टूटने से अंटार्कटिका, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमेरिका और अफ्रीका महाद्वीप का निर्माण हुआ। गोंडवाना लैंड के कुछ हिस्से लॉरेशिया के कुछ हिस्सों से जुड़ गए जिनमें अरब प्रायद्वीप और भारतीय उपमहाद्वीप हैं। शोध वैज्ञानिकों के अनुसार गोंडवाना लैंड का नाम भारत के गोंडवाना प्रदेश के नाम पर रखा गया है। लगभग 13 करोड़ साल पहले जब यह धरती 5 महाद्वीपों वाली बन गई, दुनिया व भारत के सभी ग्रंथ यही मानते हैं। हालांकि भारतीय ग्रंथों में मानव की उत्पत्ति के दो सिद्धांत मिलते हैं। पहला मानव को ब्रह्मा ने बनाया था और दूसरा मनुष्य का जन्म क्रमविकास का परिणाम है। प्राचीनकाल में मनुष्य आज के मनुष्य जैसा नहीं था। जलवायु परिवर्तन के चलते उसमें भी बदलाव होते गए। कुछ लोग अपने घरों में कोई याज्ञिक कार्य कराते हैं तो उसमें धार्मिक अनुष्ठान क्रिया में उच्चारित संकल्प मंत्र को यदि ध्यानपूर्वक सुनें तो उसमें उल्लेख आता है-जम्बू द्वीपे भारतखंडे आर्यावृत देशांतर्गते 2.। ये शब्द ध्यान देने योग्य हैं। इनमें जम्बूद्वीप आज के यूरेशिया के लिए प्रयुक्त किया गया है। इस जम्बू द्वीप में भारत खण्ड अर्थात भरत का क्षेत्र अर्थात 'भारतवर्ष' स्थित है। इस संकल्प के द्वारा हम अपने गौरवमयी अतीत के गौरवमयी इतिहास का व्याख्यान कर डालते हैं। वायु पुराण की कहानी के अनुसार त्रेता युग के प्रारंभ में स्वयंभुव मनु के पौत्र और प्रियव्रत के पुत्र ने इस भरत खंड को बसाया था। प्रियव्रत का अपना कोई पुत्र नहीं था इसलिए उन्होंने अपनी पुत्री का पुत्र अग्नीन्ध्र को गोद लिया था। जिसका लड़का नाभि था, नाभि की एक पत्नी मेरू देवी से जो पुत्र पैदा हुआ उसका नाम ऋषभ था। इस ऋषभ का पुत्र भरत था। इसी भरत के नाम पर भारतवर्ष इस देश का नाम पड़ा। उस समय के राजा प्रियव्रत ने अपनी कन्या के दस पुत्रों में से सात पुत्रों को संपूर्ण पृथ्वी के सातों महाद्वीपों का अलग-अलग राजा नियुक्त किया था। राजा का अर्थ इस समय धर्म, और न्यायशील राज्य के संस्थापक से लिया जाता था। राजा प्रियव्रत ने जम्बू द्वीप का शासक अग्नीन्ध्र को बनाया था। बाद में भरत ने जो अपना राज्य अपने पुत्र को दिया वह भारतवर्ष कहलाया। भारतवर्ष का अर्थ है भरत का क्षेत्र। भरत के पुत्र का नाम सुमति था। इस विषय में वायु पुराण के निम्न श्लोक पठनीय हैं।

सप्तद्वीप परिक्रान्तं जम्बूदीपं निबोधत।
अग्नीध्रं ज्येष्ठदायादं कन्यापुत्रं महाबलम।।
प्रियव्रतोअभ्यषिञ्चतं जम्बूद्वीपेश्वरं नृपम्।
तस्य पुत्रा बभूवुर्हि प्रजापतिसमौजसः।
ज्येष्ठो नाभिरिति ख्यातस्तस्य किम्पुरूषोअनुजः।।
नाभेर्हि सर्गं वक्ष्यामि हिमाह्व तन्निबोधत। (वायु पुराण 31-37, 38)

एक मान्यता के अनुसार कि जीवन का विकास सर्वप्रथम भारतीय दक्षिण प्रायद्वीप में नर्मदा नदी के तट पर हुआ। यहां डायनासोरों के सबसे प्राचीन अंडे एवं जीवाश्म प्राप्त हुए हैं। भारत के सबसे पुरातन आदिवासी गोंडवाना प्रदेश के गोंड संप्रदाय की पुराकथाओं में भी यही तथ्य वर्णित है। गोंडवाना मध्यभारत का ऐतिहासिक क्षेत्र है जिसमें मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र राज्य के हिस्से शामिल हैं। गोंड नाम की जाति अति प्राचीन जातियों में से एक है, जो द्रविड़ समूह से आती है।

शोधानुसार सिंधु और सरस्वती नदी के बीच जो सभ्यता बसी थी वह दुनिया की सबसे प्राचीन और समृद्ध सभ्यताओं में से एक थी। यह वर्तमान में अफगानिस्तान से भारत तक फैली थी। प्राचीनकाल में जितनी विशाल नदी सिंधु थी उससे कई ज्यादा विशाल नदी सरस्वती थी। शोधानुसार यह सभ्यता लगभग 9,000 ईसा पूर्व अस्तित्व में आई थी और 3,000 ईसापूर्व उसने स्वर्ण युग देखा और लगभग 1800 ईसा पूर्व आते-आते यह लुप्त हो गया। कहा जाता है कि 1,800 ईसा पूर्व के आसपास किसी भयानक प्राकृतिक आपदा के कारण एक और जहां सरस्वती नदी लुप्त हो गई वहीं दूसरी ओर इस क्षेत्र के लोगों ने पश्चिय की ओर पलायन कर दिया। इस प्रकार से हिमालय, हिन्द महासागर, आर्यन (ईरान) व इण्डोनेशिया के बीच के सम्पूर्ण भू-भाग को भारतवर्ष कहा जाता है। भारत एक ऐसा देश है जिसने 15 देशों को जन्म दिया।

इतनी जानकारी ग्रहण करने के पश्चात मेरी जिज्ञासा और अधिक बढ़ गई। अब मैंने यह जानने का प्रयास किया कि भारत के प्रागऐतिहासिक साक्ष्य कहां तक फैले है और साथ ही यह भी कि राम-रावण युद्ध के पश्चात आखिर हुआ क्या? इसका एक पक्ष तो हम सभी जानते है किंतु रावण कुल के साथ क्या हुआ होगा यह एक बहुत बड़ा प्रश्न रहा, मेरे लिए? इसी क्रम में मुझे रामायण काल की एक बहुत ही दिलचस्प जानकारी प्राप्त हुई, जिसे आप सभी पाठकों से सांझा करना चाहूंगा। राम - रावण युद्ध के पश्चात शूर्पणखा दैत्यगुरु {दक्ष प्रजापति की दो पुत्रियों दिति व अदिति का विवाह ऋषि कश्यप से हुआ था अदिति और ऋषि कश्यप की संताने सुर अथवा देवता कहलाई(जैसे इंद्र आदि) और दिति और ऋषि कश्यप की सन्ताने दैत्य कहलाई} शुक्राचार्य के आश्रम में जीवन व्यतीत करने चली गई। वह बहुत दुखी थी क्योंकि राक्षस कुल(रक्ष संप्रदाय से जुड़े लोग) का नाश होने की कगार पर था। इस संबंध में शुक्राचार्य भी चिंतित थे, कि ऐसा न हो कि भविष्य में एक भी राक्षस शेष न बचे। अतः राक्षसों की संतानों की रक्षा हेतु भगवान शिव की साधना की, भगवान शिव ने उनकी साधना से प्रसन्न होकर उन्हें अपना आत्मलिंग दिया, और साथ ही यह भी कहा कि जिस दिन कोई वैष्णव इस शिवलिंग पर गंगाजल चढ़ाएगा, उसी समय राक्षसों के वंश का नाश हो जाएगा। इसी भय से ऋषि शुक्राचार्य जी ने उसे सुदूर मरुभूमि पर स्थापित कर दिया, जो शायद आज भी मौजूद है। इतना ही नहीं कई अन्य तथ्य भी सामने आए।

सप्तद्वीप परिक्रान्तं जम्बूदीपं निबोधत।
अग्नीध्रं ज्येष्ठदायादं कन्यापुत्रं महाबलम।।
प्रियव्रतोअभ्यषिञ्चतं जम्बूद्वीपेश्वरं नृपम्।
तस्य पुत्रा बभूवुर्हि प्रजापतिसमौजसः।
ज्येष्ठो नाभिरिति ख्यातस्तस्य किम्पुरूषोअनुजः।।

भारतीय धर्म शास्त्रों के अनुसार ऋगवेद को आदि ग्रंथ तुल्य और साथ ही सर्वप्रथम रचित वेद माना गया है। यह संसार के उन सर्वप्रथम ग्रन्थों में से एक है जिसकी किसी रूप में मान्यता आज तक समाज में बनी हुई है। यह एक प्रमुख हिन्दू धर्म ग्रंथ है। सामान्य जन ऋगवेद को भारतीय भूमि पर लिखा हुआ मानते हैं और मैं भी ऐसा मानता आया हूं, किंतु जब मैंने इस विषय पर खोजने का प्रयास किया तो कुछ नई जानकारियां सामने आयी, जिसका वर्णन आगे किया गया है। उत्तर वैदिक काल से पहले का वह काल जिसमें ऋग्वेद की ऋचाओं की रचना हुई थी, इसमें 917 सूक्त हैं जिनमें देवताओं की स्तुति की गयी है। इन ऋचाओं की जो भाषा थी वो ऋग्वैदिक भाषा कहलाती है। ऋग्वेद को इतिहासकार हिंदी-यूरोपीय भाषा-परिवार की अभी तक उपलब्ध रचनाओं में एक मानते हैं। ऋग्वैदिक भाषा हिंद यूरोपीय भाषा परिवार की एक भाषा

है। इसकी परवर्ती पुत्री भाषाएँ अवेस्ता, पुरानी फारसी, पालि, प्राकृत और संस्कृत हैं। यह जानकर आश्चर्य होगा कि ऋग्वैदिक भाषा के मूल मातृभाषी हिंद-इरानी आर्य थे और ऋग वैदिक संस्कृत लिखने की प्रथम परंपरा का आरंभ भारत में नहीं बल्कि वर्तमान के उत्तरी सीरिया में हुआ। इसमें देवताओं का यज्ञ में आह्वान करने के लिये मन्त्र हैं। यही सर्वप्रथम वेद है। ऋगवैदिक काल का सीधा-सीधा संबंध ईरान से माना जा सकता है। प्राचीन हिट्टाइटस राज्य की राजधानी बोगजकोई की खुदाई में लगभग 1400 बी. सी. पुराना मिट्टी पर लिखा हुआ अभिलेख मिला है इस शहर का नाम मिथनी है। इतिहासकारों के अनुसार लगभग 1500 से 1350 बी.सी. के मध्य यूफ्रेट्स के उपरी हिस्से और टिगरिस नदी घाटी तक मिथनी राजवंश का शासन था। हमें यह जानकर आश्चर्य होगा ऋगवैदिक संस्कृत के प्रारंभिक साक्ष्य भारतीय क्षेत्र में नहीं, बल्कि वर्तमान का उत्तरी सीरिया है। मिथनीराज-वंश के प्रत्येक राजा का नाम संस्कृत भाषा में ही था। यही प्रथा स्थानीय सामंतों ने भी अपनाई हुई थी। संस्कृत का प्रारंभिक रूप ऋगवेद में पाया जाता है। वैदिक सभ्यता की तरह मिथनी संस्कृति में भी युद्ध में रथ का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान था।

इसे यदि सरल शब्दों में समझा जाए तो यह स्पष्ट होगा कि संस्कृत भाषा कि जिस लिपि का प्रयोग ऋगवेद में किया गया है वह लिपि भारत के वर्तमान भूभाग की न होकर मिथनी के उस प्रदेश की है, जो वर्तमान में क्षेत्र सीरिया, ईराक और तुर्की में विभाजित है। संभवतः ऐसा मान लेना चाहिए कि ऋगवेद की रचना भारत में न होकर आधुनिक सीरिया, तुर्की, ईरान के भू-भाग पर हुई तथा इन क्षेत्रों और वर्तमान भारत की विचारधारा में समानता रही होगी अथवा कालांतर में इनका अतिक्रमण किया गया होगा। ऋगवेद इस दृष्टि से भी इतिहास की एक महत्वपूर्ण रचना माना गया है। इसके श्लोकों का ईरानी अवेस्ता के गाथाओं के जैसे स्वरों में होना, इसमें कुछ गिने-चुने हिन्दू देवताओं का वर्णन और चावल जैसे अनाज का न होना इतिहास के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। अवेस्ता और ऋग्वेद दोनों में वरुण को देवताओं का अधिराज माना गया है। वेदों में उसे 'असुर विश्वदेवस' या 'असुर मेधा' कहा गया है। अवेस्ता में उसे 'अहुर मज्दा' नाम से पुकारा गया है। वैदिक 'असुर' (ईश्वर) ही अवेस्ता का 'अहुर' है और ईरानी 'मज़्दा' का वही अर्थ है जो संस्कृत 'मेधा' का। आर्यों के धर्मग्रंथ वेद और ज़रतुश्त की पुस्तक अवेस्ता में से किसी में मंदिरों या मूर्तियों के लिए कोई जगह नहीं है। हर गृहस्थ का, चाहे वह राजा हो या साधारण व्यक्ति, यह कर्तव्य है कि वह हर समय अपने घर में अग्नि प्रज्वलित रखे और उसमें यज्ञ करता रहे। वेदों में जिसे यज्ञ कहा गया है उसी को अवेस्ता में 'यस्न' कहा गया है। वेदों और अवेस्ता के धर्म ऐसे लोगों के धर्म हैं जो जीवन को खुशी और उमंग के साथ देखते थे। दोनों उच्च जीवन और नेकी के सिद्धांतों के सच्चे खोजी थे। दोनों यह मानते थे कि ईश्वरीय प्रकाश सबको अनंत सुख के लक्ष्य तक पहुँचा देता है। इस ग्रंथ को इतिहास की दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण रचना माना गया है।

रहस्य से भरे जम्बूद्वीप के विशाल रूप का अवलोकन करना अपने आप में रोमांच पैदा करने वाला अनुभव है। इतना सब कुछ जानने के बाद सहसा मन में प्रश्न कौंधता है कि उस समय का जम्बूद्वीप, जोकि इतना बृहद और विशाल था और सिमट कर अब का भारत कैसे बन गया? कौन सी परिस्थितियाँ या विषमताएं रहीं जिनके कारण इतना विघटन हुआ, जिससे जम्बूद्वीप सिमट कर भारत तक तक रह गया! साथ ही एक संभावना कि क्या कभी उनका भारत तब का जम्बूदीप पुनः बन सकेगा ?

उप महाप्रबंधक
(स्टाफ ट्रेनिंग कोलेज)

यादें

विनय खंडेलवाल

माँ बैठ के तकती थी जहाँ से मेरा रस्ता
मिट्टी के हटाते ही ख़ज़ाने निकल आए

मुमकिन है हमें गाँव भी पहचान न पाए
बचपन में ही हम घर से कमाने निकल आए

ऐ रेत के ज़र्रे तेरा एहसान बहुत है
आँखों को भिगोने के बहाने निकल आए

अब तेरे बुलाने से भी हम आ नहीं सकते
हम तुझ से बहुत आगे ज़माने निकल आए

एक ख़ौफ़ सा रहता है मेरे दिल में हमेशा
इस घर से तेरी याद न जाने निकल आए

सहायक महाप्रबंधक,
अग्रिम विभाग

बैंक का गौरव

53वें अखिल भारती बॉम्बे गोल्ड कप हॉकी टूर्नामेंट में हमारे बैंक की टीम दूसरे स्थान पर रही। बैंक की हॉकी टीम के साथ बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस. हरिशंकर जी, कार्यकारी निदेशक डॉ. फरीद अहमद, श्री गोविंद एन. डोंग्रे एवं बैंक के उच्चाधिकारी गण।

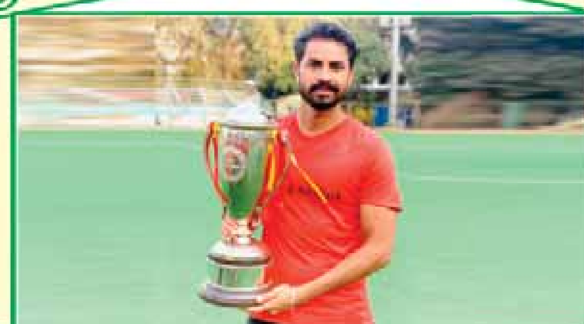

53वें अखिल भारती बॉम्बे गोल्ड कप हॉकी टूर्नामेंट में बैंक की टीम उपविजेजा रही। अत्यंत गर्व का विषय है कि श्री राजिंद्र सिंह, श्री गुनदीप पाठक, श्री संजीव कुमार एवं श्री बलजीत सिंह सैनी जैसे ओलिम्पियन हमारे बैंक में कार्यरत है जो अपने बेहतर प्रदर्शन के लिए जाने जाते है।

తెలుగింటివారి తోలి పండగ... ఉగాది

तेलुगु रचना हिंदी रूपांतर सहित

ఉగాది పేరు వినగానే అచ్చమైన ప్రకృతి పండగ అని గుర్తొస్తుంది. ఈ రోజు నుంచే తెలుగు మరియు కర్ణాటక రాష్ట్రాల వారికి కొత్త సంవత్సరం ప్రారంభమవుతుంది. చైత్రశుద్ధ పాడ్యమిని ఉగాది అని కూడా పేర్కొంటారు. ఈ పండగని వివిధ రాష్ట్రాలవారు వివిధ పేర్లతో జరుపుకుంటారు, మహారాష్ట్రలో గుడిపడవగా, ఉత్తర భారత దేశంలో బైసాకిగా జరుపుకుంటారు.

ఉగాది అంటే యుగం మరియు ఆది, అంటే ఈ రోజునే బ్రహ్మ సమస్తసృష్టిని ప్రారంభించాడని చెబుతారు. ప్రకృతి పరంగా చూస్తే మోడువారినచెట్లు చిగురిస్తూ, పూలు పరిమళాలను గుబాళిస్తూ పుడమి తల్లిని పులకింప చేసే వసంత ఋతువు కూడా చైత్రశుద్ధపాడ్యమి నుంచే మొదలవుతుంది. అందుకే ఉగాది పండగని కొత్తదనానికి నాందిగా అభివర్ణిస్తారు.

ఈ పండగ శుభ్రతకి ప్రాముఖ్యతని ఇస్తుంది, అందుకనే ఈరోజున అందరు తెల్లవారుజామునే తమ ఇళ్ళని శుభ్రపరుచుకుని మామిడి ఆకులు మరియు పూలు తోరణాలతో అలంకరిస్తారు ఇంకా పూజాకార్యక్రమాలు కొనసాగిస్తారు. భోజనప్రియులు అరుదయిన విందు; పిండి వంటలు, మామిడికాయ పులిహోర, భక్షాలు, పాయసం, ఇంకా ఎన్నెన్నో వంటకాలు చేస్తారు, కానీ అన్నిటిలోకి అతి ముఖ్యమైనది షడ్రుచులతో తయారు చేసే ఉగాది పచ్చడి. ఈ పచ్చడిని కొత్తచింతపండు, బెల్లం, మామిడిపిందెలు, వేపపువ్వు, కారం మరియు ఉప్పులని ఉపయోగించి తయారు చేస్తారు. ఈ ఆరు రుచులు జీవితంలోని బాధ, సంతోషం, ఓర్పు, సహనం మరియు సవాళ్ళకి సంకేతాలు. సంవత్సరం పొడవున ఎదురయ్యే మంచి చెడులను, కష్టసుఖాలను ఒకేలా స్వీకరించాలన్న సందేశాన్ని చెప్పకనే చెప్తుతోంది ఉగాది పచ్చడి. ప్రకృతి మార్పులకు

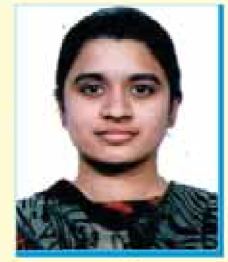

भवति

అనుగుణంగా మన శరీరాన్ని సంసిద్ధం చేసే శక్తి ఈ పచ్చడికి ఉందనిపురాణోక్తి.

సాయంకాలవేళ దేవాలయంలో జరిగే పాంగ శ్రవణాన్ని తప్పక వినాలని పెద్దలు చెబుతారు. తిథి, వారం, నక్షత్రం, యోగం, కరణం అనే ఈ ఐదు అంగాల కలయికనే పంచాంగం అంటారు. మనకు 15 తిథులు, 07 వారాలు, 27యోగాలు, 11 కరణాలు ఉన్నాయి. వీటన్నింటిని గురించే పంచాంగం వివరిస్తుంది.

గ్రీష్మ ఋతువులో వాడిపోయిన ఆకులు రాలిపోతాయి ఎండిపోయిన కొమ్మలు విరిగిపోతాయి కానీ వసంత ఋతువుయొక్క శక్తితో కొత్త చిగురు చిగురిస్తుంది కొత్తదనం వస్తుంది అలాగే మన జీవితంలో కూడా మన ఆత్మధైర్యంతో నమ్మకంతో కొత్త ఆలోచనలకి చిగురునిస్తే నవచైతన్యం తీసుకురాగలం. కష్టాలు ఎండాకాలం ఎండలు వంటివే, ఏవి శాశ్వతం కాదు. ప్రకృతిలోని మార్పులు ఎంత సహజమో జీవితంలో కష్టసుఖాలు అంతే సహజమని ప్రకృతి సాక్షిగా చాటిచెప్పడమే ఉగాది పండగ ముఖ్య ఉద్దేశం. ఈ పండగని కులం, మతం, ప్రాంతాలకి అతీతంగా ఐక్యతతో జరుపుకుంటే ప్రతిరోజు ఉగాది పండగనే.!!

ఈ ఉగాదితో " వికారనామ సంవత్సరంగా " మన ముందుకు వచ్చింది ఈ తెలుగు సంవత్సరాది.........

प्रधान कार्यालय,
मानव संसाधन विकास विभाग

तेलुगुभाषी जन का त्यौहार - उगादि

डॉ. नीरू पाठक

उगादि शब्द को सुनते ही हमें निर्मल प्राकृतिक वातावरण का अहसास होता है। चैत्र माह के शुक्लपक्ष के प्रथम दिवस को ही उगादि कहते हैं। आंध्र-प्रदेश और कर्नाटक में नव वर्ष के आगमन के रूप में उगादि मनाया जाता है। यह त्यौहार विभिन्न राज्यों में इसी दिन अलग-अलग नाम से मनाया जाता है। महाराष्ट्र में गुड़ी-पड़वा, पंजाब में बैसाखी तथा हिंदू कैलेंडर के अनुसार विक्रम संवत्सर अर्थात नव वर्ष का शुभागमन।

उगादि, युगादि शब्द का अपभ्रंश रूप है। उगादि दो शब्दों से मिलकर बना है - युग + आदि, अर्थात युग का आरंभ। इसी दिन ब्रह्माजी ने समस्त सृष्टि की रचना करना आरंभ किया था। जहाँ तक प्रकृति का प्रश्न है, पतझड़ के मौसम में जब पेड़ों के सभी पत्ते झड़ जाते हैं, उसके पश्चात उगादि से ही उनपर नयी कोंपलें आनी प्रारंभ होती हैं तथा फूल भी खिलकर पृथ्वी पर बसंत के आगमन की सूचना देकर वातावरण को सुगंध से सुवासित करते हैं। इसलिए उगादि अर्थात जीवन में नवीनता का आगमन।

यह त्यौहार स्वच्छता को अत्यंत महत्व देता है। इसलिए इस दिन सर्वप्रथम सूर्य उदय से पूर्व ही घर को साफ किया जाता है। रंगोली बनाई जाती है तथा द्वार पर आम के पत्तों तथा गेंदे के फूलों से तोरण बनाकर घर को सजाया जाता है। इसके पश्चात सभी अपने इष्टदेव की पूजा/अर्चना करते हैं। खाने के शौकीन लोगों के लिए उगादि स्वादिष्ट और तरह-तरह के भोजन का त्यौहार है। भोजन में तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं जैसे कि पायसम (खीर) पिंडी वंटलू (तरह-तरह की नमकीन), पुलिहोरा (खट्टा आम चावल), भक्षालू (मीठा परांठा) आदि। लेकिन इन सबसे अलग और सबसे महत्वपूर्ण है 06 अलग-अलग स्वादों से मिलकर बनी उगादि चटनी। यह चटनी नई इमली, गुड़, कच्चा आम, नीम के फूल, मिर्च और नमक के उपयोग से बनायी जाती है। यह 06 स्वाद, जीवन के अलग-अलग भावों को दर्शाते हे जैसे - दुख, सुख, खुशी, संयम, क्रोध एवं चुनौतियाँ। उगादि पचड़ी अर्थात चटनी का अर्थ अत्यंत व्यापक है। यह दर्शाता है कि जैसे अलग-अलग स्वाद चटनी में मिलकर एक हो जाते हैं उसीप्रकार जीवन में आए अलग-अलग भावों को भी हमें इसीप्रकार एक ही तरह से आत्मसात करना चाहिए। पुराणों में भी कहा गया है कि चैत्र माह में जिसप्रकार का बदलाव मौसम में आता है उगादि चटनी शरीर को उस बदलाव को सहने में सक्षम बनाती है।

इस दिन शाम को मंदिरों मेंपंचांग की घोषणा की जाती है। बुजुर्ग इसे सुनना अत्यंत आवश्यक मानते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करणं, इन पांचो से मिलकर ही पंचांग बनता है। तिथि 15 रहती हैं, वार सात रहते हैं। नक्षत्र 27 होते हैं तथा करणं 11 होते हैं। यह सब विस्तार से पंचांग मे बताए जाते हैं।

जिसप्रकार पतझड़ के मौसम में पेड़ से सूखे पत्ते अलग हो जाते हैं, यहाँ तक कि पतली टहनियाँ भी टूट जाती हैं लेकिन बसंत ऋतु अपने आगमन पर अपनी शक्ति से वृक्षों को नया जीवन देती है, नए पत्ते आते हैं उसीप्रकार हमें अपने जीवन में अपनी आत्मशक्ति के द्वारा कठिनाईयों तथा परेशानियों से उठकर नए विचार, नई आशा को लाकर अपनी अंतरात्मा से एकात्मकता स्थापित करनी चाहिए। कठिनाइयाँ भी सदैव रहने वाली नहीं हैं। प्रकृति में निरंतर परिवर्तन एक प्राकृतिक क्रिया है उसीप्रकार जीवन में सुख-दुख में परिवर्तन भी चिरंतन है। उगादि त्यौहार इसी का द्योतक है। इस त्यौहार को धर्म, जाति, क्षेत्रियता से उपर उठकर, एक होकर यदि मनाएंगे तो हर दिन उगादि है।

प्रत्येक वर्ष उगादि को ज्योतिष विज्ञान के आधार पर एक नाम दिया जाता है। इस वर्ष उगादि को विकारानामु संवत्सरम कहा गया है।

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग

प्रबंध कुशलता की दृष्टि से महिलाओं का महत्व

गुंजन सेठ

हम अपने जीवन में किसी प्रकार का कोई काम करते हैं उससे पहले यह विचार करते है कि इस काम को करने का तरीका क्या होना चाहिए, इसके करने से हमें क्या फायदा होगा, लागत कितनी लगेगी, समय कितना लगेगा। इन्हीं सभी चीजों को व्यवसायिक दक्षता और कौशल के साथ सुचारु रूप से निष्पादन के लिए आज प्रबंधन का महत्व काफी बढ़ गया है। इसलिए समाज के प्रत्येक क्षेत्र में प्रबंध कौशल में पारंगत लोगो की मांग काफी बढ़ गई है। बदलते आर्थिक, सामाजिक परिपेक्ष में आज हम यह देख रहे है कि प्रबंधन एक कला बन गया है। एक महिला के रूप में मैं देखती हूँ कि विश्व की प्रत्येक महिला जो कामकाजी या गृहणी मात्र है वे भी किसी प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान से डिग्री लिए प्रतिभागिओं से ज्यादा ज्ञान और अनुभव रखती है। हमें यह कहने में कतई संकोच नही है कि एक महिला बिना किसी संस्थान से डिग्री लिए भी भौतिक प्रबंधन, मानवीय प्रबंधन और आर्थिक प्रबंधन सभी क्षेत्र में सिद्धस्थ होती है।

प्रबंधन की चर्चा आमतौर पर किसी संगठन, संस्था या कंपनी आदि के संदर्भ में की जाती है। परंतु महिला का संपूर्ण जीवन एक कुशल प्रबंधकीय कौशल से संचालित होता है इसके प्रति लोगो का ध्यान कम ही जाता है। महिलाओं की प्रबंधकीय कुशलता सर्वप्रथम अपने घर के रख रखाव, परिवार का संचालन तथा अन्य घरेलू उतरदायित्व को सुचारु रूप से निर्वहन करने में परिलक्षित होती है।

विडंबना देखिए महिलाओं द्वारा किए जाने वाले घरेलू कार्यो का न तो सामाजिक महत्व है और न ही आर्थिक। महिलाओं के संदर्भ में अकसर कहा जाता है कि उन्हें नैसर्गिक रूप से घर का काम करना चाहिए। खासकर ऐसी परिस्थितियों में जब वो जॉब भी करती हैं तो भी उनसे यह अपेक्षा रहती है कि वे अन्य गृहणी महिलाओं की तरह घर का भी कार्य समान रूप से करें। यहाँ हम पुरुषों से घरेलू कार्यो में साथ देने की अपेक्षा नाम मात्र ही रखते है। जैसे की आप सभी को ज्ञात है कि मनुष्यों के शरीर में समान रूप से 24000 तंतु, 650 मांसपेशियां, 206 हड्डियां, 7 किलोमीटर लंबी नसें और 60000 मील लंबी रक्त वाहिनियां होती है परंतु जैविक रूप से महिलाओं का शरीर पुरुषों के मुकाबले थोड़ा कमजोर होता है। इन सभी बातों के मद्देनजर हमारी सामाजिक संरचना एवं सोच में अभी भी एक बात रूढ़ बनी हुई है कि महिलाएं अपना घर भी संभालें और नौकरी कर रही है तो अपनी नौकरी भी। काम के घंटे के हिसाब से देखा जाए तो हम दावे के साथ कह सकते हैं कि परिवार में शारीरिक श्रम के रूप से योगदान महिलाओं का ज्यादा रहता है। हमारी इस बात की पुष्टि भारत सरकार के संगठन, नेशनल सैंपल सर्वे के उस आकड़े में भी दिखती है जो वे अपने रिपोर्ट राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएसओ) के 68वें चक्र में इस संबंध में व्यापक आंकड़े जुटाए थे, जो बताते हैं कि महिलाएं चाहे शहरों में रहती हों या गांवों में, वो पुरुषों से ज्यादा ही काम करती हैं। हम स्पष्ट कर दें कि भगवान द्वारा महिलाओं को दिए गए नैसर्गिक वरदान बच्चे को जन्म देना और उसके प्रारंभिक लालन-पालन की चर्चा नहीं कर रहें हैं। जैविक रूप से वैसे काम जिसका प्रबंधन सिर्फ महिलाएं कर सकती है वैसा काम हेतु किसी महिला की कोई अपेक्षा नहीं । परंतु, अपेक्षा इस बात की है कि बच्चे को संभालने की सारी ज़िम्मेदारी महिलाओं पर ही क्यों आ जाती है। वही दिन से रात तक बच्चे को क्यों संभालें ? हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि इतना काम करने के बाद भी अब भी अधिकांश महिलाओं को परिवार में उचित स्थान नहीं दिया जाता है। उनसे यह अपेक्षा रहती है कि वे परिवार हेतु शारीरिक श्रम करके योगदान दें।

हम यहाँ किसी को इस बात के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं मान रहे है। समाज में उतरोत्तर परिवर्तन आ रहा है। दकियानूसी परम्पराएँ और मान्यताएँ ध्वस्त हो रही है। परंतु सवाल यह उठता है की आज के इस आधुनिक युग में जहां हम महिला पुरुष समानता की बात करते हैं और जहां वास्तव में महिलाएं हर क्षेत्र में बराबरी से सहयोग करने में सक्षम हैं ऐसी स्थिति में उसके घरेलू कार्य हेतु किए गए योगदान का महत्व क्यूँ नहीं मिल रहा है। वर्ष 2017 में यूनाइटेड नेशन डेवलपमेंट प्रोग्राम ने कहा था कि

अगर महिलाओं को रोजगार और आर्थिक गतिविधियों में पुरुषों के बराबर महत्व दिया जाए, तो भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 2.5 से 5 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। हम आपका ध्यान इस ओर विशेष रूप से आकृष्ट करना चाहते है कि देश में लगभग सत्तर प्रतिशत महिलाएं रोजगार से सीधे रूप से नहीं जुड़ी हुई है। वे महिलाएं केवल घर का कार्य करती है। उनके श्रम का महत्व सामाजिक और पारिवारिक रूप से अवश्य ही मिलना चाहिए।

पिछले दशकों में देश के भिन्न-भिन्न माननीय न्यायालय द्वारा खासकर तलाक के विषय के अंतर्गत दिए गए अपने फैसले में घरेलू कार्य करने वाली महिलाओं को भी परिवार के वेल्थ क्रिएसन में महत्वपूर्ण घटक माना है। उन्होंने माना है कि पत्नी ने घर संभाला इसलिए पति बाहर जाकर कमा पाया। इसलिए इस दौरान बनाए गए धन में दोनों का योगदान है। कानूनी प्रावधानों एवं आदर्शों के हिसाब से यह ठीक है परंतु सिर्फ कानून के समक्ष अधिकार मिलने भर से सारी समस्या का समाधान नहीं हो जाता है। वैसे भी महिलाओं के अधिकार को संरक्षण देने हेतु दर्जनों कानून पहले से बने हुए है। सामाजिक भागेदारी से ही हम महिलाओं को इन कानूनों से मिले अधिकारों को दिला सकते हैं।

आज हर तरफ महिला सशक्तिकरण की बातें होती हैं। महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार की स्थितियों को बेहतर बनाने की बात हो रही हैं। आज हमारे देश की सरकार भी महिलाओं की समाज में सक्रिय सहभागिता और सशक्तता को मजबूत बनाने के लिए नित नए कदम उठा रही हैं एवं महिला सशक्तिकरण की एक मुहिम चला रही हैं। ये सच है की सामाजिक और आर्थिक स्तर पर परिस्थितियाँ एक हद तक बेहतर हुई हैं। और महिलाओं की स्थिति में सुधार भी। किन्तु ये सिक्के का सिर्फ एक पहलू है। हमें सिक्के के दूसरे पहलू को भी देखना चाहिए। जिसके अंतर्गत कामकाजी महिलाओं को अभी भी अपने कार्य क्षेत्र एवं घर के बीच तारतम्यता बनाने में काफी दिक्कत का सामना करना पड़ता है। इन सारी दिक्कतों से जूझते हुए एक उच्च प्रबंधकीय कौशल के द्वारा वे सारी चुनौतियों का सामना करती है। यह उनका प्रबंधकीय कौशल है कि वह न केवल अपने ऑफिस को अच्छे संभालती हैं अपितु अपने घर को भी बखूबी संभालती है।

जाहिर है, एक स्वाभाविक सा सवाल सभी के मन में उठता हैं कि क्यूँ आज भी हम एक बेहतर समाज बनाने में असफल हैं जबकि हम अपने देश को दुनिया में सुपर पावर बनते देखना चाहते हैं। पर यह तब तक संभव नहीं हैं जब तक यह परिस्थितियाँ नहीं बदलेंगी। आवश्यकता सिर्फ बेहतर कानूनों और सरकारी प्रयासों की नहीं हैं। आवश्यकता एक बुनियादी बदलाव की हैं। बदलाव उस विकृत मानिसकता से है जो आज भी महिलाओं को एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में स्वीकार नहीं करती। बदलाव उस सामाजिक परंपरा में भी जहां बेटो और बेटियों की परवरिश में फर्क हैं। बदलाव उन रूढ़िवादी विचारों में भी जहां महिलाओं को एक सीमित दायरे में बांधकर रखना ही पौरुष का प्रतीक माना जाता हैं। हालांकि समाज में बदलाव हो रहें हैं परंतु उनका प्रतिशत बहुत कम हैं। हमें एक बड़े और क्रांतिकारी बदलाव की आवश्यकता हैं।

यकीन मानिए जिस दिन से हर व्यक्ति अपने अंदर ये बदलाव लाने का प्रयास करने लगेगा हमारा समाज उन्नत सुरक्षित समाज बनने की ओर अग्रसर हो जाएगा। समाज में समरसता आएगी और परिवार में एक अलग तरह की सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। किसी ने ठीक ही लिखा है

संघर्ष की चक्की चलती है
मेहनत का आटा पिसता है
सफलता की रोटी पकती है
और अपना सितारा चमकता है

महिलाओं का यह संघर्ष लगातार गांधीवादी तरीके से जारी है हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्व विश्वास है कि जल्द ही एक दिन ऐसा आएगा जब महिलाओं के पारिवारिक एवं सामाजिक योगदान का उचित सम्मान मिल पाएगा।

(शाखा-झाँसी)

बैंक के प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में विजेता

प्रतिभागी पदक प्राप्त करते हुए.......................................

अपमान मत करना नारियों का,
इनके बल पर जग चलता है,
पुरूष जन्म लेकर तो.......
इन्हीं की गोद में पलता है।

महादेवी वर्मा

कार्टून कोना

प्रवीन कुमार
शाखा गुरु का ताल, आगरा

ज़रा सोचिए?

वैभव मिश्र

बात कुछ तीन वर्ष पहले की है जब मैं एक शाम को बाजार के लिए निकला और कुछ साथी भी मेरे साथ थे वो अपनी-अपनी पंसद की चीजों के लिए अलग दुकानों पर चले गए और मैं दूसरी तरफ चला आया।

मैं एक सब्जी वाली दुकान पर सब्जी खरीदने लगा इतने मे सड़क पर कुछ व्यक्ति व लड़के पागल-पागल कहकर किसी दूसरी व्यक्ति को चिढ़ाए जा रहे थे। मैं यह सब सड़क किनारे से देख रहा था कि वह पागल व्यक्ति सड़क पर दिखने वाले ईंटों व पत्थर के टुकडों को जहां भी देखता हँसते-हँसते उठा कर अपने थैले में रख लेता था। पूरे शहर में ही इस तरह चिढ़ाया जाता था एक तो उसकी टुकड़ों को उठाने की आदत बन चुकी थी और दूसरे लोगों को उसको चिढ़ाने की।

बात छः महीने बाद लखनऊ की है जब मैं पढ़ाई के लिए यहां आया हुआ था। जैसा कि आप जानते हैं। लखनऊ बहुत बड़ा शहर है, बड़े धनी लोग वहां बसते हैं और बेरोजगार अपने रोजगार के लिए यहां आते हैं। अधिक जनसंख्या के कारण शहर का माहौल और यातायात अस्त-व्यस्त होता है।

शाम को जब मैं घूमने के लिए निकला तो एक दर्दनाक घटना मेरे सामने घटित हुई, वो यह थी कि तेज रफ्तार से सड़क पर युवक की मोटर साइकिल का पहिया सड़क पर पड़े एक ईट के टुकड़े पर चढ़ गया जिससे मोटर साइकिल अनियन्त्रित होकर सामने से आ रही कार से जा टकराई। इतने में वहां पर भीड़ एकत्रित हो गई पता चला कि मोटरसाइकिल सवार व्यक्ति की मौत हो गई। अचानक दुर्घटना का कारण बने उसे ईंट के टुकड़े को देखकर मुझे उस पागल व्यक्ति की याद आ गई और मैं इस सोच में पड़ गया कि यदि वह ईंट का टुकड़ा सड़क पर न पड़ा होता तो बात कुछ और होती।

वास्तव में उस पागल ने कितनी दुर्घटनाएं घटित होने से रोकी होगीं समझ नही आता कि पत्थर व ईंटों के टुकडों को उठाने वाला व्यक्ति पागल कैसे हो सकता है? पागल तो वो सब थे जो उस पर हँस रहे थे। अगर पागल-पागल ऐसे लोगों को कहा जाता है तो मैं भी पागल हूं, ठीक उसी दिन से मैनें भी इस पागलपन को अपना लिया और अब मैं भी सड़क पर दिखने वाले टुकडों को उठाकर किनारे कर दिया करता हूँ जिससे भविष्य में होने वाली ऐसी यातयात की दुर्घटनाओं को रोका जा सके। मैंने तो ऐसा करना सोच लिया। आप भी ज़रा सोचिए?

आँचलिक कार्यालय, बरेली

मिस यूनीवर्स का खिताब पाने वाली प्रथम भारतीय महिला – सुष्मिता सेन

ग्राहक के मुख से....

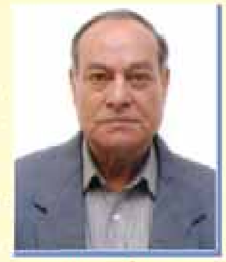
राजन रेहान

साथियो,

19 जून 1975 को गुजरावाला टाउन, दिल्ली में पंजाब एण्ड सिंध बैंक की शाखा का उद्घाटन हुआ। उस समय मिस्टर परदेसी शाखा के प्रभारी थे। पहले ही दिन मैंने धीरज ट्रेडर्स के नाम से शाखा में चालू खाता खोला तथा अपना सेविंग खाता भी खोला। उस दिन से लेकर अबतक मैं और मेरा परिवार लगातार बैंक से जुड़े हुए हैं। जिस प्रकार बैंक ने तरक्की की है उसी प्रकार हम भी उन्नति की ओर लगातार अग्रसर हैं। अमित लेदर वियर्स, अमित इम्पेक्स, अमन इम्पेक्स, सन इंटरनेशनल, रेहान मार्केटिंग नाम से कई कंपनियाँ हैं जो निरंतर प्रगति कर रही हैं। हमारी कंपनी द्वारा इंटरनेशनल ब्रांड के लेदर गार मेंट, बैग, पर्स, जूते इत्यादि बनाए जाते हैं जिन्हें यूरोप के कई देशों में, रशिया, कनाड़ा तथा अमेरिका में निर्यात किया जाता है। हमारी दो फैक्टरियाँ नोएडा में हैं तथा टेनरी बहादुरगढ़ में है। जिनमें लगभग 850 कर्मचारी कार्यरत हैं। इनमें कुछ कर्मचारी बाहर के देशों जैसे चीन. टर्की, रूस तथा कनाड़ा से भी हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी के खाते पंजाब एण्ड सिंध बैंक में ही हैं। हमारे परिवार के भी सभी सदस्यों के बैंक खाते पंजाब एण्ड सिंध बैंक में ही हैं।

गुजरावाला टाउन शाखा के साथ-साथ, बैंक की शाखा राजेन्द्र प्लेस से भी हम सन् 2012 में जुड़े और हमने लिमिट की सुविधा प्राप्त की जिससे हमने निर्यात को बढ़ाया और कनाड़ा के डेनियर ब्रांड को क्रय किया। आज लगभग हमारी कंपनी के 12 स्टोर्स कनाडा में हैं और हमारी कंपनी स्टार एक्सपोर्ट हाउस कहलाती है। हमारी इस विकास यात्रा में हमारे कार्मिकों के साथ बैंक का भी बड़ा योगदान है। न केवल शाखा प्रबंधक का बल्कि बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों ने हमें सदैव अपना सहयोग दिया तथा हमें बैंक के कार्यों से संबंधित कभी कोई परेशानी नहीं हुई। समय के साथ स्टाफ बदलता रहा, शाखा प्रबंधक भी बदलते रहे लेकिन हमें कभी भी किसी दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ा। बैंक ने अपने स्लोगन जहाँ सेवा ही जीवन ध्येय है को पूर्ण रूप से चरितार्थ किया है।

मैं बैंक का और यहाँ काम करने वाले सभी स्टाफ सदस्यों का दिल से आभारी हूँ और मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि पंजाब एण्ड सिंध बैंक दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करे।

धन्यवाद।

राजन रेहान

दूरी

कैप्टन प्रकाशचन्द्र

छूट जाती हैं बिछड़न मे चंद साँसे,
जिनसे जुड़े है हम और तुम,
छूट जाता है, हर एक कतरा,
एक हँसता हुआ लम्हा,
प्यार के कुछ अनकहे पल,
और ढेर सारी बातें।।

छूट जाता है तेरे शहर का मौसम, पुरवाई,
ठंडक हवा की, महक फूलों की,
चहचाहट – परिंदो की,
अपनों की आबोहवा और
अपनापन......

छूट जाता है मेरे मन के अशियाने का,
एक तिनका,
मेरा मन,
तेरे दामन की नजदीकी,
तेरे दिल की धड़कन,

और छूट जाता हैं,
मेरा अंश,
बिखर जाता है तिनकों सा, मेरा प्यार,
जब भी चला आता हूँ,
तेरे साये से दूर....बहुत दूर।

प्रधान कार्यालय, जनसम्पर्क विभाग

मंजिल की पुकार

रवि प्रकाश मौर्य

मैं तो तेरे मन मस्तिष्क में उपजी इच्छा का विश्वास हूँ,
जितना बड़ा विश्वास है मुझ पर, आने की उतनी हूँ करीब हूँ तेरे।
मौसम जाड़ा, गर्मी, बरसात अथक मेहनत कराती हूँ,
पर जीने की राह सीखाती हूँ मैं।

मुझ पर साहस, परिश्रम व धैर्य के साथ नजर गड़ाए रख,
जीवन में मान दिलाऊँगी
मुझ तक पहुँच कर ठहर ना जाना, दूसरी राह दिखाऊँगी,
बस तेरे इच्छा का विश्वास हूँ मैं।

मैं लड़ने की चाह बढ़ाती हूँ, गिर-गिर कर उठने का दम भराती हूँ,
ना समझ मुझको निष्ठुर, मैं अदम्य साहस सीखाती हूँ।

मुझे पाने का नहीं कोई सरल रास्ता
तपाकर सोना बनाती हूँ मैं
नहीं कोई मेरे सामने छोटा या बड़ा
सबको एक ही पाठ पढ़ाती हूँ मैं
मैं तो मंजिल – बस तेरे
मन – मस्तिष्क में उपजी इच्छा का विश्वास हूँ।

प्रधान कार्यालय,
वैकल्पिक वितरण विभाग

वह प्रथम भारतीय महिला जिसका गाना रिकॉर्ड हुआ – शशिमुखी

प्रछन्न-हितैषी

सोनी कुमार डेहरिया

मिलते हैं कुछ लोग ऐसे भी,
जो हर मोड़ पर जिंदगी के, याद आते हैं,
रिश्ता तो कोई होता नहीं उनसे,
लेकिन फिर भी, वो कुछ ख़ास बन जाते हैं।।
भूले रहते हैं हम उनको,
रोज़मर्रा की दौड़-भाग भरी जिंदगी की कश्मकश में,
लेकिन वो अचानक से दस्तक क देते हैं,
और जगा देते हैं, हमारे अंदर के हुनर को,
जो हौसले के बावजूद भी दबा रहता है, किसी कोने में,
और हम मस्त होते हैं सोने में,
जिंदगी के सुनहरे पलों और सपनों को भूलकर,
खुद से अनजान रहते हुए जिंदगी को बिताने में।
शायद वो कोई पहरेदार हैं !
जो हमें जीवन के प्रति जगाने के साथ-साथ, एक संदेश भी देते हैं,
जिंदा रहने का,
तन के साथ-साथ मन से भी,
ठीक उस कहावत की तरह कि,
''आदमी अगर जिंदा है, तो जिंदा नज़र आना भी चाहिए'',
वास्तव में तो,
वो हमारे प्रछन्न-हितैषी ही होते हैं,
जो अनायास ही हमारे हित में लगे रहते हैं,
उनकी ऐसी प्रेरणा,
कभी-कभी मन झकझोर देती है मेरा,
और मजबूर कर देती है मुझे ये सोचने पर,
कि कहीं मैं कोई अन्याय तो नहीं कर रहा,
अपने ही ऊपर,
खुद को कहीं रोक तो नहीं दिया मैंने,
कमज़ोर समझकर,
फिर अंदर से एक दृढ़ विश्वास भरी आवाज़ आती है,
जो कहती है कि ''डेहरिया'' वो सब होगा,
जो तुम चाहते हो,
लेकिन चलना होगा तुम्हें बस,
वक्त की नब्ज को समझकर।।

आँचलिक कार्यालय, पंचकूला

वी. एस. मिश्रा

पीला नीला लाल, उड़ते रंग-गुलाल
अल्हड़ फाग बयार, मस्ती का त्यौहार।
झूमो-गाओ होली है, मिलकर नाचो होली है
बच्चे-बुढ़े सब मिल गाएं, होली है भई
होली है।

रूखे-सूखे चेहरे हंस दे, तब यह समझो होली है
हर घर में जो चूल्हे दहके, तब यह समझो होली है।
घर-घर में त्यौहार मने, तब यह समझो होली है
'भाई-भाई' सब मिल गाएं, होली है भई होली है।।

मस्ती का उल्लास, नीला-नीला आकाश
प्रकृति का श्रृंगार, रंगों का त्यौहार।
गुजिया खाओ होली है, पूए उड़ाओ होली है
दही-बड़े की होली है, होली है भई होली है।।

फागुन का उल्लास, हास और परिहास
होलिका के दहन से, चमके सत्य उजास।
खूब मनाओ होली है, बैर भुलाओ होली है
रंग-रगोली होली है भई होली है।।

इस होली में ऐसा कुछ हो, उड़े इतना गुलाल
एक ही रंग में रंग जाए सब, भारत माँ के लाल।
नारी के सम्मान की खातिर कुर्बान जवानी होली है
मातृभूमि के चरणों पर सर्वस्व न्यौछावर होली है।।

विविध रंग है हिंद देश का, भाषा मजहब पहनावे का
इस धरती पर पले-बढ़े सब, आखिर तो हमजोली है।
हिंदू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, सब मिल झूमे होली है
अब तो सारा देश नाचे, होली है भई होली है।

आँचलिक कार्यालय, भोपाल

भारत की प्रथम महिला जिसे जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार दिया गया – मदर टेरेसा

राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा.

कुलदीप सिंह खुराना

सामान्यतः यह माना जाता है कि आज भारत में जो भाषाएं बोली जाती हैं, उनका प्रारंभ लगभग एक हजार वर्ष से भी पहले हुआ। हिंदी का इतिहास भी प्रायः एक हजार वर्ष पुराना बताया जाता है, पर सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ हरदेव बहारी का मानना है ''इस तरह से यह कहना कठिन होगा कि वैदिक भाषा ही (जिसका प्रारंभ उन्होंने 2400 ई.पू. माना है) प्राचीनतम हिंदी है। इस भाषा के इतिहास का दुर्भाग्य है कि युग-युग में इसका नाम परिवर्तित होता रहा, कभी वैदिक, कभी संस्कृत, कभी प्राकृत, कभी अपभ्रंश और अब हिंदी। आधुनिक हिंदी के बारे में यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि उसने एक ओर तो संस्कृत से शब्द ही नही लिए हैं, उसके अनेक गुण भी अपनाएं हैं, वहीं दूसरी ओर भारत की विभिन्न भाषाओं में अरबी, फारसी, तुर्की जैसी एशियाई भाषाओं से अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसिसी, जर्मनी जैसी यूरिपीय भाषाओं से भी शब्द लेकर अपने को समृद्ध किया है। लिपि के लिए उसने देवनागरी को अपनाया जो सारे भारत में प्रचलित रही। इस प्रकार भारत की समन्वयवादी संस्कृति ओर एकता का प्रतीक बन गई।

अखिल भारतीय संपर्क के लिए जहां विद्वानों के बीच संस्कृत का प्रयोग प्राचीन काल से लेकर इस शताब्दी के प्रथम चरण तक खूब होता रहा, वहां आम जनता के बीच अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी का ही प्रयोग काफी समय से हो रहा है। धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और राजनीतिक परिस्थितयों ने हिंदी को एक बहुत बड़े क्षेत्र में फैलने का अवसर दिया है। यही कारण है कि 15वीं शताब्दी में भक्ति आनंदोलन के प्रमुख आधार-स्तंभ दक्षिण के वल्लभाचार्य अपने प्रवचनों में हिंदी का प्रयोग करते थे, क्योंकि उन्हें भक्ति का प्रचार आम जनता के बीच करना था। महाराष्ट्र के नामदेव, तुकाराम आदि ने, गुजरात के नरसी मेहता और दूसरे भक्त कवियों ने, बाबा नानक तथा अन्य सिख गुरूओं ने जहां स्थानीय जनता के लिए लोकभाषाओं में लिखा, वहीं विशाल जनसमाज के लिए, पूरे देश के लिए हिंदी में लिखा। उत्तर भारत के ही नहीं, दक्षिण भारत के, तमिलनाडू के, केरल के सूफी संतों ने भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए इसी भाषा को अपनाया। सांस्कृतिक पुर्नजागरण काल के नेताओं ने ''देवभाषा'' (संस्कृत) की तुलना में हिंदी को ''आर्यभाषा'' और अखिल भारतीय संपर्क की दृष्टि से उसे ''राजभाषा'' का नाम दिया।

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से प्रत्येक प्राणी अपने विचारों को दूसरों पर अभिव्यक्त करता है। यह ऐसी दैवी शक्ति है, जो मनुष्य को मानवता प्रदान करती है और उसका सम्मान तथा यश बढ़ाती है। जिसे वाणी का वरदान प्राप्त होता है, वह बड़े से बड़े पद पर प्रतिष्ठित हो सकता है और अक्षय कीर्ति का अधिकारी भी बन सकता है। किंतु, इस वाणी में स्खलन या विकृति आने पर मनुष्य निंदा ओर अपयश का भी भागी बनता है। यही नही अवांछनीय वाणी, उसके पतन का भी कारण बन सकती है। अतः वाणी या भाषा का प्रयोग बहुत सोच विचार कर करना चाहिए। इसलिए राजकीय कार्यों में पूर्ण सोच विचार के बाद उपयुक्त भाषा का प्रयोग करने की परंपरा रही है।

स्वतंत्रता आंदनोलन में हिंदी मुख्य संपर्क भाषा रही। सांस्कृतिक धरातल पर जनभाषा के रूप में हिंदी का स्वरूप निर्विवाद रहा। राष्ट्रीय आंदोलन के साथ हिंदी के प्रति जो राष्ट्रीय चेतना प्रस्फुटित हुई वह राष्ट्रभाषा ओर राष्ट्र प्रेम के साथ एकाकार हो गई। राष्ट्रभाषा हिंदी देश प्रेम की उत्कट भावनाओं का प्रतीक बन गई। महात्मा गांधी जी ने तो कहा कि

भारत की प्रथम मुस्लिम आई. पी. एस. महिला – कु. नुजहत खान

हिंदी देशा की सेवा की यह पहली सीढी है। स्वतंत्रता आनदोलन के सभी नेताओं ने "राष्ट्रभाषा" के रूप में हिंदी को न केवल अपनाया है बल्कि उसे अपनाने के लिए दूसरों को भी प्रेरित किया परिणामस्वरूप "राष्ट्रभाषा" शब्द खूब प्रचलित हो गया।

हिन्दी को राजभाषा का सम्मान कृपापूर्वक नहीं दिया गया, बल्कि यह उसका अधिकार है। यहां अधिक विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है, केवल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा बताये गये निम्नलिखित लक्षणों पर दृष्टि डाल लेना ही पर्याप्त रहेगा, जो उन्होंने एक 'राजभाषा' के लिए बताये थे-

1. अमलदारों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।
2. उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।
3. यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।
4. राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।
5. उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्प स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।

इन लक्षणों पर हिन्दी भाषा बिल्कुल खरी उतरती है।

हिंदी को राजभाषा के रूप में आकार लेने के लिए अनेकोनेक विचार मंथन की प्रक्रिया से उसे गुजरना पड़ा। संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा बनाने के लिए देश के विभिन्न भाषा - भाषी प्रतिनिधि विचार-विमर्श के बाद एक मत हुए लेकिन अंग्रेजी को जारी रखने की कालवधि के बारे में नेताओं में मतभेद था। अंततः 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में देववागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा और भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में देववागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा और भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

संविधान के 343 से 351 तक के अनुच्छेद में भाषा से संबंधित उल्लेख किया गया है जिनमें यह कहा गया है कि संघ की राजभाषा हिंदी ओर लिपि देवनागरी होगी तथा संघ के शासकीय प्रयोजनो के लिए प्रयुक्त होने वाले अंकों का स्वरूप भारीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। इनमें यह भी उल्लेख किया गया है कि संविधान लागू होने के पश्चात् 15 वर्ष तक अंग्रेजी का प्रयोग उसी प्रकार से होता रहेगा जिस प्रकार पहले होता था। 1965 से पहले भी राष्ट्रपति आदेश द्वारा किसी काम के लिए अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी के प्रयोग की अनुमति दे सकते हैं। 1957 में गठित संसदीय समिति का विचार था कि 1965 के बाद भी हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखा जाना व्यवहारिक होगा अतः 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया जिसके अनुसार संविधान लागू होने के 15 वर्षों के पश्चात भी सरकारी काम-काज में हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी का प्रयोग किया जा सकेगा।

1967 में राजभाषा अधिनियम (संशोधित) पारित करते हुए कुछ प्रपत्रों के लिए हिंदी और अंग्रेजी का प्रयोग अनिवार्य कर दिया गया। राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) के अंतर्गत राजभाषा नियम 1976 (यथा संशोधित 1987) बनाए गए जिनका अनुपालन करना प्रत्येक सरकारी कर्मचारी के लिए अनिवार्य है।

इसे केवल सरकारी कामकाज की भाषा तक सीमित रखना उचित नहीं होगा। बल्कि सच तो यह है कि अनुच्छेद-351 के निर्देश के अनुरूप हिंदी का सामासिक स्वरूप राजभाषा की अपेक्षा व्यापक जनसंपर्क, शिक्षा, साहित्य, मीडिया, वाणिज्य, व्यवसाय, ज्ञान विज्ञान और तकनीकी की भाषा के रूप में उसके व्यापक व्यवहार द्वारा ही संभव है।

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

भारत की प्रथम महिला उपन्यासकार – स्वर्णकुमारी देवी

ऋतुराज का आगमन

भारती

हवा हूं हवा, मैं बसंती हवा हूं। सुनो बात मेरी, अनोखी हवा हूँ।।... आज न जाने क्यूं बार-बार जुबान पर यह गीत आ रहा है। यह शायद मौसम का असर है। मौसम प्रकृति के बदलाव का अहसास कराता है। हर बदलती हुई ऋतु अपने साथ एक संदेश लेकर आती है। ऐसे ही बदलाव का कुछ-कुछ अहसास होने लगा है। हवा में चुभन भरी शीत हवाओं में कोसा पन आ गया है। हवा सुहावनी लगने लगी है और साथ ही मन ताजगी का अनुभव करने लगा है। बसंत को ऋतुओं का राजा अर्थात सर्वश्रेष्ठ ऋतु माना गया है। इस समय पंचतत्त्व अपना प्रकोप छोड़कर सुहावने रूप में प्रकट होते हैं। पंचतत्त्व, जल, वायु, धरती, आकाश और अग्नि सभी अपना मोहक रूप दिखाते हैं।

यह वही अवधि है, जिसमें पेड़-पौधे तक अपनी पुरानी पत्तियों को त्यागकर नई कोपलों से आच्छादित दिखाई देते हैं। समूचा वातावरण पुष्पों की सुगंध और भौंरों की गूंज से भरा होता है। मधुमक्खियों की टोली पराग से शहद लेती दिखाई देती है, इसलिए इस माह को मधुमास भी कहा जाता है। मौसम ने करवट ले ली है। चारों ओर रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। पक्षियों का कलरव भी मन को लुभा रहा है। ये बसंत का असर है। माघ माह के साथ ऋतुराज का आगमन हो चला है। मौसम खुशनुमा होने के साथ-साथ रूमानियत से भर गया है। संपूर्ण आबो-हवा में फूलों की खुशबू फैलने लगी है जो हृदय को प्रफुल्लित कर रही है। इसे प्रकृति का उपहार ही कहा जा सकता है। 'पौराणिक कथाओं के अनुसार वसंत को कामदेव का पुत्र कहा गया है। कवि देव ने वसंत ऋतु का वर्णन करते हुए कहा है कि रूप व सौंदर्य के देवता कामदेव के घर पुत्रोत्पत्ति का समाचार पाते ही प्रकृति झूम उठती है, पेड़ उसके लिए नव पल्लव का पालना डालते है, फूल वस्त्र पहनाते हैं पवन झुलाती है और कोयल उसे गीत सुनाकर बहलाती है।" आश्चर्य की बात यह है कि इसी माह में पश्चिम प्रभाव से भारत में भी वेलेंटाइन डे मनाया जाता है।

वसंत ऋतु को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। इसके कई कारण है- नई फसलों के तैयार हो जाने से उल्लास और खुशियों का भाव पैदा होता है। मौसम सुहावना हो जाता है, आम की मनमोहक खुशबू, कोयल की कूक, शीतलमंद सुरभित हवा, सुहावनी शाम, विवाह के मांगलिक कार्य होना, फाल्गुन के मदमस्त करने वाले गीत सब मिलकर अनुकूल समा बांधते है। इसीलिए वसंत को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। जिसका वर्णन हिंदी फिल्मों में भी किया गया है। हिंदी फिल्म का बसंत बहार(1956) का गीत 'केतकी, गुलाब जूही चंपक व फूल, रितु बसंत अपनो कंत, गोदी गरवा लगाए। 'पं. भीमसेन जोशी/मन्ना डे द्वारा रचित इसी बसंत का वर्णन करता है।

वसंत ऋतु में माघ माह से लेकर फाल्गुन माह तक वसंत पंचमी, महाशिवरात्रि और होली का त्यौहार मनाया जाता है। वैसे तो माघ का पूरा मास ही उत्साह देने वाला है, लेकिन वसंत पंचमी का पर्व भारतीय जनजीवन को कई तरह से प्रभावित करता है। वसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी वीणापाणि देवी सरस्वती की पूजा-आराधना की जाती है। यह त्यौहार पूर्वी उत्तर भारत, पश्चिमोत्तर बांग्लादेश, नेपाल और भारत के कई राज्यों में बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन पीले वस्त्र धारण करने की परंपरा रही है। देवी सरस्वती की पूजा के पीछे एक पौराणिक कथा छिपी हुई है। ऐसा कहा जाता है कि सृष्टि के प्रारंभिक काल में भगवान विष्णु की आज्ञा से ब्रह्मदेव ने जीवों और खासकर मानवजाति की रचना की। किंतु अपनी सर्जना से वे संतुष्ट नहीं थे, उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि कुछ कमी रह गई है जिसके कारण चारों ओर मैं छाया हुआ है। अतः भगवान विष्णु की आज्ञानुसार ब्रह्मदेव ने अपने कमंडल से जल छिड़का, पृथ्वी पर जलकण बिखरते ही कंपन होने लगा। इसके बाद वृक्षों के बीच से एक अद्भुत शक्ति का प्राक्ट्य हुआ। यह प्राकट्य एक देवी का था, जिनके हाथ में वीणा और दूसरे हाथ में मुद्रा थी। अन्य दोनों हाथों में पुस्तक एवं माला थी। ब्रह्मदेव ने वीणा बजाने का अनुरोध किया। जैसे ही देवी ने वीणा का मधुरनाद किया, मानो समस्त संसार में प्राण भर गए हो, वाणी का उद्‌गार हो गया हो। जलप्रवाह में कोलाहल उत्पन्न हो गया। पवन के बहने की सरसराहट होने लगी। तब ब्रह्मा जी ने समस्त संसार में प्राण भरने वाली देवी को वाणी की देवी सरस्वती कहा। संगीत की उत्पत्ति के कारण ये संगीत की देवी भी है। संगीत में एक विशेष राग वसंत के नाम पर बनाया गया जिसे 'वसंत राग' कहा जाता है। विद्या और बुद्धि की प्रदाता है सरस्वती। इसी कारण वसंत पंचमी के दिन को इनके जन्मोत्सव के रूप में भी मनाते हैं। ऋगवेद में देवी सरस्वती का वर्णन करते हुए कहा गया है-

''प्राणो देवी सरस्वती वाजोभिर्वजिनीवती धीनामणित्रयवतु।"
अर्थात ये परम चेतना हैं। सरस्वती के रूप में ये हमारी बुद्धि, प्रज्ञा तथा मनोवृतियों की संरक्षिका है। हमारे अंदर जो आचार और मेधा है, उसका

आधार है देवी सरस्वती।

वसंत ऋतु यानी पेड़ पौधों के झूमने, गाने, इठलाने और खिलखिलाने का वक्त। जब प्रकृति चारों तरफ अपने रंग बिखेर डालती है शायद ही कोई ऐसा हो जो इस ऋतु का स्वागत न करता होगा। चटख पीला रंग तो है ही वसंत का। सोचो अगर दुनिया में रंग न होते तो दुनिया कैसी होती। पीला रंग हमारे दिमाग को अधिक सक्रिय करता है। इस संदर्भ में फेंगशुई विशेषज्ञ कहना है कि पीले रंग के परिधान हमारे दिमाग के उस हिस्से को अधिक अलर्ट करते हैं, जो हमें सोचने-समझने में मदद करता है। यही नहीं, पीला रंग खुशी का एहसास कराने में भी मददगार होता है। पीले रंग के परिधान पहनने के साथ ही हमें सप्ताह में दो-तीन बार पीले रंग के खाद्य पदार्थ जैसे पीले फल, पीली सब्जियां और पीले अनाज का भी सेवन करना चाहिए। इससे हमारे शरीर में मौजूद हानिकारक तत्त्व बाहर निकल जाते हैं। ये हानिकारक तत्त्व शरीर के अंदर बने रहने पर नर्वस सिस्टम को प्रभावित करते हैं। नतीजतन दिमाग में उठने वाली तरंगें खुशी का एहसास कराती हैं।

बसंत ऋतु का आगमन प्रकृति को बासंती रंग से सराबोर कर जाता है। बसंत पंचमी पर सब कुछ पीला दिखाई देता है। पीला रंग हिन्दुओं में शुभ माना जाता है। पीला रंग शुद्ध और सात्विक प्रवृत्ति का प्रतीक माना जाता है। यह सादगी और निर्मलता को भी दर्शाता है।बसंत ऋतु में सरसों की फसलें खेतों में लहराती हैं,फसल पकती है और पेड़-पौधों में नई कोपलें फूटती हैं। प्रकृति खेतों को पीले-सुनहरे रंगों से सजा देती है। जिससे पृथ्वी पीली दिखती है। बसंत का स्वागत करने के लिए पहनावा भी विशेष होना चाहिए इसलिए लोग पीले रंग के वस्त्र पहनते हैं। पीला रंग प्रफुल्लता, हल्केपन खुलेपन और गर्माहट का आभास देता है। केवल पहनावा ही नहीं खाद्य पदार्थों में भी पीले चावल, पीले लड्डू व केसर युक्त खीर का उपयोग किया जाता है। मन्दिरों में बसंती भोग रखे जाते हैं और बसंत के राग गाए जाते हैं।

इसके अतिरिक्त यह पर्व हमें अतीत की अनेक प्रेरक घटनाओं की भी याद दिलाता है। सर्वप्रथम तो यह हमें त्रेता युग से जोड़ती है। रावण द्वारा सीता के हरण के बाद श्रीराम उसकी खोज में दक्षिण की ओर बढ़े। इसमें जिन स्थानों पर वे गये, उनमें दण्डकारण्य भी था। यहीं शबरी रहती थी। जब राम उसकी कुटिया में पधारे, तो वह सुध-बुध खो बैठी और चख-चखकर मीठे बेर राम जी को खिलाने लगी। दंडकारण्य का वह क्षेत्र वर्तमान भारत का गुजरात और मध्य प्रदेश में फैला हुआ क्षेत्र है। गुजरात के डांग जिले में वह स्थान है जहां शबरी का आश्रम है। ऐसा माना जाता है कि वसंत पंचमी के दिन ही रामचंद्र जी वहां आये थे। उस क्षेत्र के वनवासी आज भी एक शिला को पूजते हैं, जिसके बारे में उनकी श्रध्दा है कि श्रीराम आकर यहीं बैठे थे। वहां शबरी माता का मंदिर भी है।

वसंत पंचमी का दिन अपने एतिहासिक महत्ता के कारण भी महत्वपूर्ण है।वसंत पंचमी का दिन हमें पृथ्वीराज चौहान की भी याद दिलाता है। उन्होंने विदेशी हमलावर मोहम्मद गोरी को 16 बार पराजित किया और उदारता दिखाते हुए हर बार जीवित छोड़ दिया, पर जब सत्रहवीं बार वे पराजित हुए, तो मौहम्मद गौरी ने उन्हें नहीं छोड़ा। वह उन्हें अपने साथ अफगानिस्तान ले गया और उनकी आंखें फोड़ दीं। इसके बाद की घटना तो जगप्रसिद्ध ही है। मौहम्मद गौरी ने मृत्युदंड देने से पूर्व उनके शब्दभेदी बाण का कमाल देखना चाहा। पृथ्वीराज के साथी कवि चंदबरदाई के परामर्श पर गोरी ने ऊंचे स्थान पर बैठकर तवे पर चोट मारकर संकेत किया। तभी चंदबरदाई ने पृथ्वीराज को संदेश दिया।

चार बांस चौबीस गज,
अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है, मत
चूको चौहान।।

पृथ्वीराज चौहान ने इस बार भूल नहीं की। उन्होंने तवे पर हुई चोट और चंदबरदाई के संकेत से अनुमान लगाकर जो बाण मारा, वह मोहम्मद गोरी के सीने में जा धंसा। इसके बाद चंदबरदाई और पृथ्वीराज ने भी एक दूसरे के पेट में छुरा भोंककर आत्मबलिदान दे दिया। (1192 ई) यह घटना भी वसंत पंचमी वाले दिन ही हुई थी।

अपने पौराणिक और एतिहासिक महत्व के साथ साथ वसंत ऋतु अपने आप में ही सबसे महत्वपूर्ण है। इस ऋतु में एक प्रकार से नवजीवन का आरंभ होता है। फूलों की कलियाँ अपने पूरे शबाब में खिलती है और प्रकृति का स्वागत अच्छी मुस्कान के साथ करती है। फूलों का खिलना चारों ओर खुशबू को फैलाकर बहुत सुन्दर दृश्य और रोमांचित भावनाओं का निर्माण करता है । मनुष्य और पशु-पक्षी स्वस्थ, सुखी और सक्रिय महसूस करते हैं।

(एसटीसी, रोहिणी)

भारत की प्रथम अंतरिक्ष विज्ञानी महिला – सविता रानी

बैंक के सभी आँचलिक कार्यालयों में खेल दिवस का आयोजन किया गया।

विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। प्रस्तुत हैं कुछ झलकियाँ...

भविष्य निधि विभाग

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ ''श्री रामचरितमानस" में धर्म की व्याख्या करते हुए लिखा है-

परहित सरिस धर्म नहीं भाई
पर पीड़ा सम नही आधिमायी

अर्थात दूसरों के हित से बढ़कर कोई धर्म नही है। हमारे पंजाब एंड सिंध बैंक की भी यही टैग लाइन है ''जहाँ सेवा ही जीवन ध्येय है''

पंजाब एण्ड सिंध बैंक में काम करते हुए मुझे कई विभागों और शाखाओं में काम करने तथा लोगों की सेवा करने का सुअवसर मिला। भविष्य निधि विभाग उनमे से एक है। रोज़मर्रा के कार्यालय के काम के बीच हमे कभी ये सोचने का वक़्त ही नही मिलता की इस बैंक से रिटायर होने के बाद की जिंदगी क्या होगी। पर यहाँ इस विभाग में बैठ कर मुझे लगा की इस बैंक को अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले लोगो के प्रति भी हमारी कुछ जिम्मेदारियां है। आने वाले कस्टमर का भला तो हम रोज ही करते है पर क्या अपने सहकर्मियों का भी ध्यान रखना हमारा कर्तव्य है? इन्हीं सब प्रश्नों के उत्तर के लिए आइये आपको आज एक ऐसे विभाग ले चलती हूँ जहाँ वो लोग आते है जो कभी इस बैंक के महत्वपूर्ण अंग हुआ करते थे। जो समय के साथ चलते हुए एक दिन हमसे अलग हो गए या फिर भुला दिए गए। कभी सोचा है आपके बगल में बैठने वाले आपके वरिष्ठ सहकर्मी जो आपकी हर काम में सहयता करते है आज सेनानिवृत हो जाये और कल से अपनी कुर्सी पर न दिखे तो आपको कैसा लगेगा. नही सोचा? आज यहाँ से जाने के बाद कल से उनका जीवन कैसा होगा.... आपने नहीं सोचा होगा ... पर हम सोचते है, हमारा भविष्य निधि विभाग सोचता है। इस विभाग में कई तरह के काम होते है मैं सिलसिलेवार ढंग से बताती हूँ आपको।

भविष्य निधि (Provident Fund)- भविष्य में काम आने वाली राशि को ही भविष्य निधि कहते है। हमारे हर महीने के वेतन (मूल वेतन + महंगाई भत्ता) का 10% कट कर हमारे भविष्य निधि खाते में जाता है। इस राशि पर हमारा बैंक हमें 8.7% की दर से ब्याज देता है। इस खाते में जमा हुई राशि से हम समय समय पर अपनी जरूरतों के हिसाब से लोन भी ले सकते है. यह लोन दो प्रकार के होते है- 1.Temproray 2. Permanent

सेवानिवृत्तित्ति के वक़्त ये राशि हमें प्रोविडेंट फण्ड के रूप में मिल जाती है.

उपदान (Gratuity)- उपदान का पैसा बैंक द्वारा अपने कर्मचारियों को दिया जाता है. इसे हिंदी में उपदान भी कहते है. उपदान का आशय ऐसी राशि से है जिसे कर्मचारी को उसकी सेवानिवृत्ति पर अथवा मृत्यु की दशा में उसके आश्रितों को प्रदान की जाती है। यह पेंशन नियमों के तहत आने वाले सभी कर्मचारियों को दी जाती है. वर्ष 2016 में इसे नई पेंशन योजना (NPS) से शासित होने वाले कर्मचारियों के मामले में भी लागू कर दिया गया है।

शिखाश्री

उपदान तीन पद्धति से दिया जाता है.

1. Payment of Gratuity Act 1972- इस एक्ट के तहत उपादान की गणना निम्नालिखित तरीके से की जाती है

= मूल वेतन (DA, FPA, PQA)X सेवा अवधि X 15 / 26

2. OSR & अधिकारियों अथवा उससे ऊपर के कर्मचारी के लिए उपदान की गणना OSR तहत की जाती है. इसमें 15 सालो तक की सेवा के लिए हर एक साल की अवधि पर एक महीने के मूल वेतन के बराबर रकम मिलती है। उसके बाद 31वे साल से हर साल पर 15 दिन के मूल वेतन के बराबर रकम मिलती है।

OSR के अंतर्गत उपदान पाने वाले कर्मचारियों के लिए न्यूनतम सेवा अवधि 10 साल है।

3. नियम 8B& 01.01.1983 से पहले के अधिकारियों पर ये नियम लागू होता है.

छुट्टी नकदीकरण (Leave Encashment): कर्मचारियों की बची हुई छुट्टियों का भी नकदीकरण किया जाता है। इसमें मूल वेतन + DA, FPA, PQA, HRA , CCA को ध्यान में रखकर गणना की जाती है

= 60 days leave / 30 X gross salary

अधिकतम 240 अर्जित छुट्टियों के नकदीकरण का ही प्रावधान है।

पेंशन (Pension): 01 अप्रैल 2010 से पहले बैंक में नियुक्ति पाने वाले सेवानिवृत्त कर्मचारियों को पेंशन का प्रावधान है। पेंशन की गणना निम्नलिखित प्रकार से की जाती है।

Pension= average 10 month salary/2 x no of service/33

कर्मचारी की मृत्यु पर भी कुटुंब पेंशन मिलने का नियम है। कुटुंब पेंशन की अवधि होगी-

a. विधवा या विधुर की होने की दशा में, मृत्यु या पुनर्विवाह की तारिख तक, इनमे से जो भी पहले हो
b. पुत्र की दशा में, जब तक वह 25 वर्ष की आयु का नही हो जाता, और
c. अविवाहित पुत्री की दशा में, जब तक वह 25 वर्ष की आयु की नही हो

जाती या जब तक उसका विवाह नही हो जाता, इनमे से जो भी पहले हो, होगी।

सारांशीकरण (Commutation): आपकी पेंशन के एक तिहाई भाग के हकदार आप सेवानिवृत्ति के समय ही हो जाते है।

Commuted amount = Commuted basic x 9-81 x 12

(Commuted Basic = मूल वेतन/3)

पंजाब एंड सिंध बैंक कर्मचारी कल्याण नियम कर्मचारियों को उत्साह और जज्बे के साथ काम करने के लिए प्रेरित करने के लिए, बैंक का कल्याण ट्रस्ट कई कल्याणकारी योजनाओं की शुरुआत करता है। इन योजनाओं की समय समय पर समीक्षा की जाती है। हमारे परिवार का ख्याल रखने के अलावा ये योजनाएं हमे बैंक के लिए अच्छा काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है। ये योजनाएं निम्नलिखित है-

1. **बालिका छात्रवृत्ति-** कर्मचारियों की पुत्रियों को कक्षा एक से कक्षा दस तक की पढाई के लिए Rs 4000/- हर साल मिलने का प्रावधान है।

2. **बालक छात्रवृत्ति -** अधीनस्थ कर्मचारियों के बच्चों (पुत्रों)के लिए भी छात्रवृत्ति की शुरुआत 01.04.2012 में कर दी गयी है। इसमें कक्षा एक से कक्षा दस तक की पढाई के लिए Rs 4000/- हर साल मिलते हैं।

3. **मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की योजना-** कक्षा 11वी से परास्नातक तक की पढाई के लिए तथा व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के लिए अलग अलग छात्रवृत्ति की राशि तय की गयी है।

4. **सामान्य स्वास्थ्य जांच-** 35 तथा इससे अधिक उम्र के कर्मचारियों के लिए सामान्य स्वास्थ्य जाँच हेतु कुछ राशि प्रदान की जाती है। इस राशि के लिए कर्मचारी को मूल बिल लगाने की आवश्यकता होती है।

5. **दन्त चिकित्सा पर होने वाला व्यय -** दन्त चिकित्सा पर होने वाले व्यय की प्रतिपूर्ति भी की जाती है। इसमें अलग अलग कर्मचारियों के पदानुसार भिन्न भिन्न सीमा तय की गयी है।

6. **मृत कर्मचारियों के परिवार को सहायता-** इस योजना का उद्देश्य कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों को कर्मचारी की असमय मृत्यु के कारण वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना है। योजना के अंतर्गत कर्मचारी की बैंक सेवाओं के दौरान मृत्यु के कारण उनके तुरन्त के सामाजिक दायित्वों को निभाने हेतु परिवार के सदस्यों को Rs 20,000/- की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

मृत्यु प्रमाण पत्र जमा करने के बाद भविष्य निधि विभाग बाकि की सहायता राशि (i) Rs 70000/- अधीनस्थ कर्मचारियों के लिए (ii) Rs 95000/- अधिकारियों तथा उससे ऊपर के कर्मचारियों के लिए दी जाती है।

नई पेंशन प्रणाली (NPS): नई पेंशन प्रणाली मूलतः एक अंशदायी योजना है। यह अंशदान पर आधारित एक ऐसी प्रणाली है जो दिनांक 01 अप्रैल 2010, से प्रभावी है। इसकी न्यूनतम आयु 18 वर्ष तथा अधिकतम आयु 65 वर्ष है। अंशदान की कटौती हेतु दो विकल्प उपलब्ध कराए गए हैं- टियर -1 एवं टियर - 2। टियर 1 में कर्मचारियों को वेतन तथा महंगाई भत्ते का 10 प्रतिशत की दर से आवश्यक अंशदान करना होगा एवं उसी के समतुल्य अंशदान सरकार द्वारा किया जायेगा। टियर-2 के अंतर्गत कर्मचारी द्वारा स्वैच्छिक अंशदान किया जायेगा।

नई पेंशन प्रणाली से जुडी कुछ महत्वपूर्ण बातें -

1. वर्ष 2016 में इस योजना के अंतर्गत आने वाले कर्मचारियों को मृत्यु सह सेवानिवृत्ति उपदान भी लागू कर दिया गया है।

2. कर्मचारी के अंशदान की राशि आयकर से मुक्त होगी।

3. इस योजना के अंतर्गत वर्तमान में "पारिवारिक पेंशन" का कोई प्रावधान नही हैं।

4. चूँकि यह योजना निश्चित अंशदान पर आधारित है इसीलिए सेवानिवृत्ति लाभों के प्रयोजन के लिए अहर्क सेवा अवधि की प्रासंगिकता समाप्त हो चुकी है।

5. इस योजना के तहत स्वयं के योगदान का 25% आंशिक निकासी के तौर पर निकला जा सकता है। यह राशि बच्चों के विवाह, पढाई, घर बनाने, कुछ बीमारियाँ, बिज़नेस स्टार्टअप, कौशल विकास के लिए निकाली जा सकती है।

प्रधान कार्यालय, भविष्य निधि विभाग

डिजिटल भारत

अलीमुद्दीन सिद्दीकी

डिजिटल भारत या डिजिटल इंडिया, भारत सरकार द्वारा शुरू की गयी एक मुहिम है ताकि भारत में लोगों को टेक्नोलॉजी और डिजिटल दुनिया का ज्ञान दिया जा सके। आज भारत डिजिटल दुनिया से बहुत दूर है क्योंकि ज्यादातर लोग ऑनलाइन दुनिया से अभी तक बहुत दूर हैं इसलिए यह मुहिम शुरू की गयी है। डिजिटल इंडिया मुहिम का लक्ष्य खासकर सभी सरकारी सुविधाओं को इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपलब्ध और इंटरनेट से जोड़ने का कार्य शुरू किया गया है। इससे ना सिर्फ हर भारतीय का डिजिटल लेन-देन का ज्ञान बढ़ेगा बल्कि साथ ही देश भी भ्रष्टाचार मुक्त बनेगा।

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 1 जुलाई, 2015 को डिजिटल इंडिया पहल की थी। सरकार द्वारा इस प्रोजेक्ट को साल 2019 तक पूरे भारत में डिजिटल सुविधाएँ प्रदान करने की योजना है। साथ ही इस योजना के अनुसार ग्रामीण इलाकों को तेज़ इंटरनेट की सुविधा प्रदान की जाएगी। डिजिटल इंडिया के मुहिम से कागज़ों में लेखा-पढ़ी होने वाला समय भी बचेगा और कार्यालयों में लोगों की लंबी कतारों में कमी आएगी। इस प्रोजेक्ट में मुख्य भूमिका 'संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय' का है जो इसके पीछे काम में लगे हुए हैं।

डिजिटल भारत के तीन प्रमुख कार्य:-

(1) प्रत्येक नागरिकों को डिजिटल इंडिया की उपयोगिता से रूबरू कराना

(2) नागरिक की मांग पर शासन और सेवाएं प्रदान करना

(3) हर नागरिक को डिजिटल शक्ति प्रदान करना

डिजिटल भारत अभियान के मुख्य उद्देश्य :-

1. डिजिटल व्यवस्था को सुरक्षित बनाना

अगर यह योजना भारत में पूर्ण रूप से सफल हो जाती है तो इससे देश के विकास में बहुत बड़ा योगदान मिलेगा। इससे लोग ऑनलाइन के सभी सेवाओं का उपयोग कर सकेंगे जिससे देश में उनकी पूंजी और सुरक्षित रहेगी। साथ ही डिजिटल इंडिया मुहिम के अनुसार भारत में छोटे गाँव से शहरों तक सभी जगह हाई स्पीड इंटरनेट की सुविधा दी जायेगी जिसकी मदद से लोग ऑनलाइन की सुविधाओं का उपयोग करना सीखेंगे और उसे जीवन का एक हिस्सा बनाये।

2. सरकार की सेवाएं ऑनलाइन करना

आज ज्यादातर कार्यालयों में इंटरनेट के माध्यम से काम हो रहा है। पर अभी भी कुछ सरकारी कार्यालयों में ऑनलाइन काम शुरू नहीं हुआ है। इस मुहिम के अनुसार सभी गवर्नमेंट आर्गेनाईजेशन में बहुत जल्द सभी सेवाओं को ऑनलाइन कर दिया जायेगा। ऑनलाइन सेवाओं की मदद से लोगों को ज्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा, भ्रष्टाचार नहीं हो पायेगा।

3. डिजिटल साक्षरता को प्रोत्साहन

सरकार ने इस मुहिम के साथ-साथ आधार कार्ड से मोबाइल नंबर, पैन, बैंक अकाउंट, जीवन बीमा, जैसी सेवाओं को जोड़ चुकी हैं जिसकी मदद से अब हर भारतीय की पहचान सही प्रकार से हो पायेगी और लोग इन सेवाओं को आधार से लिंक होने के कारण आसानी से उपयोग कर पाएंगे। साथ ही अब नौकरी के लिए और स्कूलों में आवेदन देना बहुत आसान हो गया है क्योंकि अब सब कुछ डिजिटल रूप से लिंक किया जा रहा है।

डिजिटल इंडिया द्वारा चलाई जाने वाली प्रमुख योजनाएं: डिजिटल इंडिया द्वारा भारत के विकास के लिए कुछ योजनाएं चलाई जा रही है जिसमें पहले से प्रचलित ई गवर्नेंस योजना का यह बहुत ही प्रतिभाशाली रूप है जिसे नव स्तंभों का नाम दिया गया है जो प्रत्येक नागरिक को कई डिजिटल सुविधाएं प्रदान करेगा।

डिजिटल भारत अभियान द्वारा चलाई जाने वाली प्रमुख योजनाएं:-

डिजिटल भारत द्वारा भारत के विकास के लिए कुछ योजनाएं चलाई जा रही है जिसमें पहले से प्रचलित ई गवर्नेंस योजना का यह बहुत ही प्रतिभाशाली रूप है जिसे नव स्तंभों का नाम दिया गया है जो प्रत्येक नागरिक को कई डिजिटल सुविधाएं प्रदान करेगा। वो स्तंभ इस प्रकार है-

(1) ब्रॉड बैंड हाइवे
(2) लोकहित पहुंच कार्यक्रम
(3) मोबाइल कनेक्टिविटी
(4) एक क्रांति
(5) ई गवर्नेंस
(6) सभी की सूचना
(7) नौकरी के लिए आई .टी.
(8) पूर्व फसल कार्यक्रम
(9) इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण

डिजिटल भारत अभियान के लाभ:-

डिजिटल इंडिया से हर व्यक्ति की जिंदगी में एक बदलाव आया है। डिजिटल इंडिया के लाभ अनेक हैं। अगर सरकार की इस मुहीम को हम सब मिल के और

मदद करें तो ये अभियान हमें अपनी जिंदगी में एक वरदान के रूप में वापस मदद करेगा।

(1) डिजिटल इंडिया प्रोग्राम से सही जन को उसका सही लाभ मिल रहा है।
(2) डिजिटल इंडिया प्रोग्राम से रिश्वत की आदत को जड़ से मिटाने में एक प्रकार की मदद हो रहा है।
(3) डिजिटल इंडिया प्रोग्राम से कागज़ कार्यवाही में बेकार की खर्च में कमी नज़र आ रही है।
(4) डिजिटल इंडिया प्रोग्राम से हर चीज़ का सही सूचना लोगों तक पहुँच रहा है।
(5) डिजिटल इंडिया प्रोग्राम से देश में हो रही विभिन्न मुहीम की जानकारी पाने में सरलता दिख रही है।
(6) डिजिटल इंडिया प्रोग्राम से एक स्वच्छ और सत्य भारत का निर्माण हो रहा है।
(7) डीजिटल इंडिया प्रोग्राम से हर व्यक्ति और सरकारी बेसरकारी कार्यालयों में समय की बचत हो रहा है।

डिजिटल भारत अभियान के सामने मुश्किल चुनौतियां:-

(1) देश की धीमी इन्टरनेट स्पीड डिजिटल इंडिया के लिये एक बड़ी बाधा बनी हुई है।
(2) देश की तकनीकी कमी की कारण सुरक्षा पर खतरा लहरा सकता है।
(3) बच्चों पर इन्टरनेट उपयोग की आजादी के चलते डिजिटल इंडिया पर मुश्किल लहराई हुई हैं।
(4) देश में बिजली की परेशानी भी डिजिटल इंडिया की सफलता में एक रुकावट है।

डिजिटल भारत अभियान की मुख्य सेवाएं:-

इस मुहिम को सफल बनाने के लिए सबसे पहले सरकार ने आधार की मदद से लोगों का बायोमेट्रिक डाटा लिया जिससे उनका अद्वितीय पहचान मिल सके अद्वितीय पहचान।

सभी भारतीय लोगों का अद्वितीय पहचान मिलने के बाद भारतीय नागरिकों से सभी सेवाओं जैसे मोबाइल नंबर, पैन, बैंक अकाउंट, जीवन बीमा, राशन कार्ड, गैस कनेक्शन, ड्राइविंग लिसेंस को आधार कार्ड से जोड़ा जा रहा है।

उसके बाद आधार की मदद से लोगों को सभी सुविधाएँ दी जा रही है।

इससे लोगों की पहचान सही प्रकार से हो पा रही है और साथ ही भ्रष्टाचार करने वाले कम हो गए हैं।

अब आप घर बैठे आधार की मदद से मोबाइल सिम खरीद सकते हैं, अपना पैन अप्लाई कर सकते हैं, अपने व्यापार को उद्योग आधार की मदद से पंजीकृत कर सकते हैं, अपना जीवन बिमा ऑनलाइन ले सकते हैं, और ऐसी कई सेवाएं हैं जो ऑनलाइन के वाई सी और ओ टी पी की मदद से कुछ ही मिनटों में पूरे हो रहे हैं जिनके लिए कभी लोगों को महीनों तक इंतज़ार करना पड़ता था।

अब लगभग सभी भारतीय बैंकों में ऑनलाइन बैंकिंग और एटीएम की सुविधा है जिसकी मदद से लोग घर बैठे सभी पैसों लेन-देन कर सकते हैं।

अब पैन को भी आधार से जोड़ा गया है जिसकी मदद से कोई भी आयकर चोरी नहीं कर सकेगा और साथ ही लोग टीडीएस (स्रोत पर कर-कटौती) भी घर में बैठे भुगतान कर सकते हैं।

अगर आपको बिना किसी दुकान गए ही घर बैठे कम दाम में सामान मिले तो आप ज़रूर खरीदेंगे। अब ऑनलाइन शौपिंग वेबसाइट पर घर बैठे सामन खरीद सकते हैं और अपना समय और पैसा बचा सकते हैं। पर ख़ास बात है लोगों को डिजिटल रूप से शिक्षित होने की।

अब आप डीजी लॉकर की सुविधा से अपने सभी ज़रूरी डाक्यूमेंट्स को वेरीफाई करके मोबाइल फ़ोन में रख सकते हैं। इससे आपके डाक्यूमेंट्स गुम हो जाने का खतरा दूर होता है।

सबसे ज़रूरी बात यह है कि सरकार यह सब डिजिटल सुविधाएँ और सेवाएँ लोगों के लिए शुरू कर रही है। ऐसे में हर भारतवासी का कर्तव्य है कि वह डिजिटल लेन-देन का इस्तेमाल करना सीखें क्योंकि यह सरल, सुरक्षित और सफल जीवन की शुरुवात है। इससे हम लोगों का समय ही बचता है और समय का मूल्य तो आप जानते हैं आज की दुनिया में पैसों से भी ज्यादा है। चलिए दोस्तों इंटरनेट तथा डिजिटल दुनिया से जुड़े और भारत को एक सफल और विकसित देश बनायें।

डिजिटल सेवाएँ मिलेंगी, आधारिक संरचना सुधरेगी।
जय हिंद जय भारत

शाखा हाथरस

अवसाद के कराण और निवारण

अवसाद को अँग्रेजी मे डिप्रेशन (Depression) कहते हैं, यह बीमारी किसी भी उम्र की महिला और पुरुष को हो सकती है। कुछ दिमागी चिकित्सकों का मानना है कि दिमाग में मौजूद रसायन(Chemical) के गड़बड़ी के कारण अवसाद होता है। अवसाद होने पर व्यक्ति लंबे समय तक उदास, दुखी और तनाव मे रहता है जिसकी वजह से जीवन मे उसकी दिलचस्पी कम होने लगती है और दिमाग मे नकारात्मक भावनाएं आ जाती हैं और किसी भी काम के अच्छे परिणाम की संभावनाएं व्यक्ति को न के बराबर लगती हैं।

अवसाद से बाहर आने मे किसी भी इंसान को कुछ समय तो अवश्य लगता है। अवसाद विरोधी दवाओं का सेवन कर इस बीमारी से कुछ समय तक छुटकारा पाया जा सकता है परंतु अभी तक ऐसा कोई टेस्ट नहीं है जिससे दिमाग में मौजूद रसायन(Chemical) के स्तर का पता लगाया जा सके। पुरुषों के मुकाबले स्त्रियाँ अवसाद से अधिक प्रभावित होती हैं। अवसाद व्यक्ति की व्यक्तिगत और व्यवसायी जीवन दोनों पर ही बुरा प्रभाव डालता है। यदि बिना किसी उपचार के इस बीमारी को यूं ही छोड़ दिया जाये तो यह हमारी जिंदगी को बहुत मुश्किल मे डाल सकता है।

अवसाद और उदासी मे अंतर – अवसाद और उदासी के अंतर को समझना बहुत जरूरी है क्योंकि हम सभी कभी न कभी उदासी का सामना करते हैं। कभी - कभी उदास होना नॉर्मल है पर समस्या तब होती है जब आप इस उदासी में ही डूबे रहते हैं। लगातार उदासी में डूबे रहना ही अवसाद है।

उदासी– किसी बुरी घटना और परिस्थिति के कारण मन उदास और दुखी होता है। एक बार जगह बदलने पर या फिर थोड़ा समय बीत जाने पर यह उदासी दूर हो जाती है।

अवसाद– अवसाद में आप किसी एक वजह से उदास नहीं होते बल्कि हर चीज को लेकर उदासी महसूस करने लगते हैं। व्यक्ति हर समय बिना किसी कारण के भी किसी गम में डूबा रहता है।

अवसाद क्यूं होता है?

अवसाद का सबसे बड़ा कारण चिंता और तनाव है, जिसके लिए ज्यादातर हालात जिम्मेदार होते हैं। अवसाद शारीरिक परेशानियों से भी जुड़ा हो सकता है इसके साथ साथ और भी कुछ कारण हो सकते हैं :

- किसी अपने से दूर होना
- किसी प्रतियोगिता में हार जाना
- नौकरी छूट जाना या पैसों का नुकसान होना
- मेहनत के बाद भी उम्मीद जितना परिणाम न मिलना
- सेवानिवृत्ति के बाद खुद को बेकार समझना
- कर्ज बढ़ जाना और उसे चुकाने का कोई तरीका न होना

सुमन कुमार

अवसाद में क्या करें ?

- जब अवसाद के लक्षण लंबे समय तक दिखे तब व्यक्ति को अकेला नहीं रहना चाहिए।
- इस बीमारी में व्यक्ति खुद को सबसे अलग कर लेता है, ऐसे में बाहर निकलने की सोचना मुश्किल काम है। आप बाहर निकलें और कुछ नए पुराने दोस्तों से मिलें।
- शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए अच्छी नींद लेना बहुत जरूरी होता है।
- किसी भी प्रकार के ड्रग्स का इस्तेमाल न करें। सिगरेट, शराब और ड्रग्स अवसाद को बढ़ावा देते हैं।

अवसाद का इलाज और उपाय :

- **रोजाना व्यायाम करें** : अवसाद मे रहने वाला व्यक्ति ज्यादा शारीरिक काम नहीं कर पाता। तनाव और बेचैनी से बचने के लिए शारीरिक काम करना बेहद जरूरी है।
- **खाने पीने का विशेष ख्याल रखें** : कई तनाव के कारण कुछ भी खाने का मन नहीं करता और कई बार ज्यादा खाने का मन करता है। अगर अवसाद के कारण आपकी भूख और पाचन शक्ति पर असर पड़ रहा है तो आपको पौष्टिक आहार लेना चाहिए।
- **अपनी समस्या दूसरों से बांटें** : आप उन हालात को पहचानने की कोशिश करें जिसकी वजह से आप अवसाद के शिकार हो गए हैं और जब आपको अपनी परेशानियों की वजह समझ आ जाए तब अपने घर के किसी सदस्य से या फिर अपने सबसे भरोसेमंद मित्र से अपनी परेशानियाँ सांझा करें।
- **अपने पसंद का काम करें** : अवसाद के कारण इंसान हँसना और मौज मस्ती करना भूल ही जाता है। इस हालात से बाहर निकलने के लिए आप अपने शौक और पसंद के काम करें।
- **अच्छे दिनों को याद करें** : अवसाद का सबसे बुरा असर आपकी सोच पर पड़ता है, कुछ भी अच्छा नहीं लगता और आप आशाहीन होने लगते हैं। ऐसे समय में आपको हमेशा याद रखना चाहिए कि जीवन में अच्छा और बुरा वक्त आता जाता रहता है लेकिन फिर भी जिंदगी खत्म नहीं हो जाती। ऐसे वक्त में आपकी मीठी यादें आपका सहारा बन सकती है।

आंचलिक कार्यालय, लुधियाना

हिंदी/पंजाबी कार्यशाला

आँचलिक कार्यालय, होशियापुर

आँचलिक कार्यालय, गुरदासपुर

आँचलिक कार्यालय, कोलकाता

आँचलिक कार्यालय, पटियाला

स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र रोहिणी

आँचलिक कार्यालय, भोपाल

सहभागी

अकेली

प्रदीप राय

बेटा आजकल अमेरिका में अच्छी नौकरी पर है। कार्य-व्यस्तता के कारण इतनी दूर से उसका भी बार-बार आना संभव नहीं है। परंतु फोन पर सुबह-शाम अपने पिता का हाल-चाल पूछने में वह कोई कसर नहीं छोड़ता। पिता ने क्या खाया... समय पर दवाई ली या नहीं... तबियत का हाल... 'वॉक' पर जाने की बात... और भी सारी बातें पूछ लेता है वह अपनी बातचीत के दौरान। बीच-बीच में वह किसी-न-किसी बहाने पिता से आग्रह करता कि वे अमेरिका आ जाएं। विडिओ कॉल भी करता... कहता, "आप कमजोर दिखने लगे हैं... खाने-पीने पर ध्यान नहीं दे रहे हैं... या और भी कुछ कारण बता कर अपने पास बुलाने की जिद करता। पर दिवाकर बाबू हर बार कोई-न-कोई बहाना ढूँढ लेते और टाल जाते बेटे के पास जाने की बात को। ऐसा नहीं है कि अमरीका में बेटे के पास उनका मन नहीं लगता हो। तीन साल हो गए बेटे को गए। इस बीच हर साल ही तो वे और अनु, बेटे के पास छः-छः महीने बीता कर आए हैं। बेटा तो छोटी-से-छोटी उनकी हर बातों का बखूबी ध्यान रखता। किसी बात की कोई कमी नहीं छोड़ता। परंतु अब उन्हें अगर किसी की फिक्र है तो वह है सिर्फ अनु की। उनके यहां से चले जाने पर अनु जो अकेली हो जाएगी। उसका ख्याल कौन रखेगा !

अनु को हमेशा से ही अकेलापन खलता था। भरे-पूरे परिवार में पली-बढ़ी अनु को भीड़भाड़ पसंद थी। अकेले में उसका दम घुटता था। अनु बेचैन-सी हो जाती अपने को अकेले में पा कर। दिवाकर बाबू यह भली-भांति जानते थे। तभी तो वे इसका यथायथ ख्याल रखने की कोशिश करते। पर अपनी नौकरी की व्यस्तता में उलझे रहने के कारण अपने कार्यकाल के दौरान अनु के प्रति सम्पूर्ण न्याय करना उनके लिए संभव नहीं हो पाया था। नौकरी ही ऐसी थी कि घर-परिवार के लिए समय नहीं निकाल पाते थे। शुरुआती दिनों में अनु को समय काटना दूभर लगता था। परंतु उन दोनों के जीवन में बेटे का आना मानो समस्या का हल मिल जाना था। अनु का समय बेटे के लालन-पालन में ऐसे कटता कि दिवाकर बाबू को वह पर्याप्त समय नहीं दे पाती। बेटा जब तक छोटा था तब तक अनु उसकी देख-रेख में, स्कूल के लिए उसे तैयार करने में, उसकी पढाई-लिखाई में... खेल-कूद में व्यस्त हो जाती। दसवीं के बाद प्लस-टू के लिए बेटे को हॉस्टल में छोड़ना पड़ा क्योंकि जहाँ दिवाकर बाबू कार्यरत थे वहां उच्च-शिक्षा के लिए पर्याप्त सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

बेटे के हॉस्टल जाने के बाद अनु पूरी तरह से अकेली हो गई। पति सुबह आठ बजे निकल जाते तो वापस शाम आठ बजे से पहले तो कभी भी नहीं आ पाते। अनु को समय नहीं दे पाते। नौकरी से सेवामुक्त होने के बाद उन्होंने अपनी यह पहली प्राथमिकता समझी कि अनु को अब कभी अकेलेपन का सामना नहीं करना पड़ेगा। अब ज्यादा-से-ज्यादा समय अपने पत्नी के साथ बीताने लगे। उन्हें अकेला कभी नहीं छोड़ते।

बेटा भी अपने पिता की इच्छा को खास अहमियत देता। जबरदस्ती नहीं करता। जबरन तो वह भी नहीं गया था अमरीका... आगे की पढ़ाई के लिए, जबकि अमरीका में 'मास्टर्स' करने का निर्णय उसका ही था। बी.टेक के बाद वह बंगलौर में अच्छी खासी नौकरी पर था, पैकेज भी अच्छा था... पर उसे आगे पढ़ने की इच्छा जो थी। अनु उसे बाहर पढ़ने भेजना नहीं चाहती थी, वह चाहती थी कि विदेश के अलावा यहीं कहीं एम.टेक कर ले। 'प्लस टू' के लिए भी बेटे को जब हॉस्टल भेजने की बात चली थी तब भी उसका विरोध किया था अनु ने। वह अपने इकलौते बेटे को अपनी नजरों से दूर रखना नहीं चाहती थी। वह अपनी इस जिद पर अटल रही। वैसे तो दिवाकर बाबू भी पत्नी के निर्णय से सहमत थे। परंतु बेटे की इच्छा को ध्यान में रखते हुए दिवाकर बाबू ने यह उचित समझा कि वे बेटे के करियर में बाधा नहीं बनेंगे। और पत्नी को समझा-बूझा कर बेटे को पढ़ाई के लिए अमरीका भेजने के लिए मना लिया था। अनु के पास इसका कोई विकल्प नहीं था। नहीं चाहते हुए भी भारी मन से उसने बेटे के हित में हामी भरी थी। पर बेटे को अपने से दूर भेजने की एक टीस जो दिल के किसी कोने में दबी सी रह गई थी, रह-रह कर उसे परेशान करती रही। और अंदर-ही-अंदर घुटती रही। इसका इजहार उसने पति से भी करना उचित नहीं समझा ताकि बेटे की पढाई में कहीं कोई अड़चन न आ जाए।

एक अड़चन जो आई थी, वह थी पैसे की। रिटायरमेंट पर मिली हुई राशि के अलावा कुछ और पैसों की कमी थी। अनु ने उसका समाधान बड़ी आसानी से अपने जेवर वगैरह बेच कर दिया था। अब धरोहर कहने को दिवाकर बाबू के पास सिर्फ वह मकान ही शेष था। उन्हें उस मकान से मोह-सा हो गया था। वहां रहते हुए उन्हें सुकून मिलता था। वहां अनु भी थी तथा जीवन की ढेरों यादें वहां कैद जो थीं। उन्हें याद करते हुए अजीब सी खुशी का अहसास होता था उनको। दीवारों से बातें करते थे। अतीत के उन सुनहरे पलों को वे फिर से जी लेते थे... खुशी का अनुभव करते। घंटो खो जाते थे वे अतीत के उन धुंधलके में। उन धुंधले पलों को खो देना नहीं चाहते थे वे। तब उनका भरा पूरा परिवार उनके साथ था। बेटा पापा की तमाम खुशियों को बखूबी समझता था।

उनकी खुशियों में शामिल थीं पेड़-पौधे और बागवानी भी। बागवानी उनकी शौक में शुमार था। छत पर गमले में तरह-तरह के पौधे उगाये थे। पौधों को रोज सुबह-शाम खाद-पानी देना... सूखे पत्तों को काटना-छांटना... खुरपी से मिटटी को खुरचना... मधु मालती की बेतरतीब बेलों को सहेजना... उनके रोज का क्रम था। सुबह का कुछ समय वे पेड़-पौधों की निगरानी में बीताते हुए खुशी का अनुभव करते।

वैसे तो उन्हें चाय पीने की आदत नहीं थी। पर चाय पीने के बहाने दोनों कुछ समय एक साथ जो बीताते... यही कारण था कि दिवाकर बाबू ने चाय पीने के शौक को पाल रखा था। वो भी सिर्फ सुबह-शाम दो कप अनु के हाथ की बनी अदरक वाली चाय। चाय पीते हुए कभी-कभार नोक-झोंक भी होती। दिवाकर चाय में कोई नुक्स निकालकर चुटकी लेते। इस पर अनु अभिमानवश उलाहना देती कि मैं तो रोज चाय बनाती हूँ, कभी आप भी पिला दिया करो। लाख कोशिश के बावजूद भी दिवाकर बाबू से चाय नहीं बनती थी। अनु ने ही उन्हें चाय बनाना सीखाया था।

अनु ने जैसा बताया था... उन्होंने पहले चाय का पानी उबाला... चाय की पत्ती और दूध डाल कर फिर चीनी डाली। उन्होंने दो कप चाय बनाई। एक कप अनु के लिए ढक कर गैस के पास रख दिया तथा दूसरा कप अपने लिए लेकर बालकनी में बैठ गए। अखबार की सुर्खियों को पढ़ने के साथ-साथ चाय पीने लगे। यह चाय अनु के हाथ की जैसी नहीं बनी थी।

थोड़ी देर बाद नहा-धो कर पूजा-पाठ में बैठ गए। तुलसी के बिरवे में पानी डाला। सूर्य की पूजा की। उन्हें पूजा की किसी भी विधि का ज्ञान नहीं था और न ही मंत्र वगैरह का। बस, अनु ने जैसा बताया था वैसा ही करते थे वे। पहले तो अनु के द्वारा किए जाने वाले इन सब धार्मिक कर्मकांडों पर वे हँसते थे। इनमें उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। वे इसे महज ढकोसला के सिवा कुछ नहीं मानते थे। भगवान के नाम पर पूजा-पाठ, व्रत-उपवास पर उन्हें कभी श्रद्धा नहीं थी। वे दलील देते कि भगवान को मानने का यह मतलब नहीं है कि आप पूजा-पाठ करें या व्रत-उपवास। ईश्वर का निवास फोटो या मूर्ति में नहीं होता। वे तो सर्वत्र विद्यमान हैं, निराकार हैं। उनका सच्चा स्वरुप तो गरीबों की आँखों में, दीन-दुखियारों के चेहरे पर मिलेगा। उनकी सेवा ही सच्ची ईश्वर-सेवा है... उनके भूखे पेट में अन्न का दाना दे सकने में जो आत्म-संतुष्टि मिलती है वह किसी भगवान के समक्ष प्रसाद अर्पण करने में नहीं। ज्ञान की ऐसी बातों से दिवाकर बाबू का मकसद अनु को चिढ़ाना ज्यादा होता था समझाना कम। इस बात पर अनु बिगड़ जाती। बिगड़ कर कहती कि इतना भी घमंड ठीक नहीं होता। कभी-कभार तो भगवान का नाम ले लिया करो। उनके आगे सर झुका लिया करो। ऐसे तर्कों में दिवाकर बाबू आखिर में अनु को ही जीतने का मौका देते हुए उसके समक्ष हथियार डाल देते। दरअसल अनु जो कहती, वे तटस्थ भाव से करते... सब कुछ उसकी संतुष्टि के लिए।

शायद अनु के कहने का असर है कि आजकल वे पूजा-पाठ में अपने को संलिप्त रखने लगे हैं। या शायद अनु की बात रख उसे खुश रखना चाहते हों। चाहे कुछ भी रहा हो अब तो उन्हें पूजा-पाठ अच्छा लगने लगा है। समर्पित भाव से पूजा करने में वे आनंद पाते, जबकि पहले वे इसे महज अंधविश्वास के अतिरिक्त कुछ भी मानते नहीं थे।

अनु के कहने पर दिवाकर कभी-कभार खाना भी बना लेते थे। कभी-कभी तो खाना स्वादिष्ट होता था। अनु इस बात को स्वीकार करती। पर दिवाकर के लिए तो अनु के हाथ के पके खाने का स्वाद ही बेजोड़ है। उसके समक्ष दुनिया की सारी पकवानें उन्हें बेस्वाद और फीकी लगती। अनु भांति-भांति की लजीज से लजीज खाना पकाती। उनकी पसंद-नापसंद का ख्याल रखती। परोसती भी बड़े ही सलीके से। पास बैठ कर खिलाती। खाना खाते हुए सुख-दुःख की ढेरों अंतरंग बातें होती। 'प्लस टू' के लिए बेटा जब हॉस्टल चला गया था तब से दोनों मिलकर एक ही थाली में परोस कर खाना खाते। कई दिन हुए उन दोनों ने एक साथ खाना नहीं खाया था । दिवाकर बाबू ने आज निश्चय किया कि आज वे दोनों साथ मिलकर खाना खाएंगे। अनु की पसंदीदा खाना वे खुद बनाकर उसे खिलाएंगे।

चावल और दाल को अलग-अलग साफ किए। फिर कुकर के सेपरेटर में अलग-अलग डाल कर पकाए... रोटी और सब्जी बनाई। यह सब करते हुए उन्होंने सोचा कि अनु को वह अब गर्व से कहेगा कि आजकल उन्हें चावल पकाना आ गया है... अब चावल कच्चे नहीं होते और ना ही गीले। सब्जी भी ठीक-ठाक काट लेता हूँ, अब चाकू से हाथ नहीं कटते। आटा भी गीला नहीं होता... रोटी भी गोल-गोल और करारी सेंक लेता है अब वो। कमीज के बटन भी टांक लेता है। कपड़ों को आयरन भी कर लेता है।

खाना पकाने के बाद तीन सेल वाला लंच-बॉक्स निकालते हैं। उसमें सलीके से खाने को पैक करते हैं... ठीक उसी तरह जैसे अनु अक्सर उसे दफ्तर के लिए पैक कर देती थी। और विभिन्न व्यंजनों से सजे उस लंच-बॉक्स को दफ्तर में वे अपने सहयोगियों और मित्रों के बीच खोलने में गर्व का अनुभव करते। खाने से पहले ही व्यंजनों की सजावट पर अनु के लिए दोस्तों की भूरी-भूरी प्रशंसा से उनका दिल भर जाता था।

एक बार यूं ही किसी बात पर अनु ने दिवाकर से कहा कि आप से तो घर का कामकाज कुछ होता ही नहीं है। मेरे बाद आप क्या करेंगे? दिवाकर अनु के अहेतुक-से लगने वाले प्रश्न पर कुछ विस्मित हुए पर तनिक संयत हो कर कहा कि मैं तो किसी तरह काम चला लूंगा, संभव है खाना पकाना वगैरह सब कुछ सीख भी लूँगा। पर तुम क्या रह पाओगी मेरे बिना? कई बार ऐसा हुआ है कि मैं अपने काम से जब भी दो-एक दिनों के लिए बाहर जाता, तुम जैसे-तैसे रह लेती थी पर किसी के द्वारा सहायता का अहसान कतई नहीं लेती थी। नौकर-चाकर से भी तुम कड़ाई से पेश नहीं आती। तुम्हें उन लोगों से कुछ भी कहते नहीं बनता। सगे-संबंधियों में सभी तुम्हारी उदारता का गलत मतलब निकालते, तुम चुप-चाप सह लेती, कुछ नहीं कह पाती। बदले में मेरे सामने सिर्फ आंसू बहाती। इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम्हें किसी के सामने जलील होना पड़े। जब तक भी तुम रहो स्वाभिमान से रहो, मेरी देख-रेख में रहो।

पर आदमी जो सोचता है, वह होता कब है? कालचक्र अपना काम नामालूम ढंग से करता है। इस अप्रत्याशित जीवन में पता नहीं हममें से कौन पहले सिधार जाए, पर मेरी यह एकांत इच्छा रही है कि मेरे हाथों संसार से तुम्हारी विदाई हो। वैसे तो तुम्हारे बिना मेरा भी जीना दूभर हो जाएगा पर तुम शायद मेरी जुदाई बर्दाश्त ही नहीं कर पाओगी। ऐसा कहते हुए बच्चों की तरह दोनों बिलख कर रो पड़े थे। चारों ओर एक गहरी उदासी और सन्नाटे का माहौल पसर गया था।

लंच-बॉक्स लिए उदास मन से अपने कमजोर कदमों को धीरे-धीरे दिवाकर बाबू घर के पिछवाड़े के बगीचे की तरफ बढ़ाते हैं। वहाँ सफेद रंग से पुते हुए उस चबूतरे की ओर खिंचे चले जाते हैं। चबूतरे पर बैठकर बॉक्स को खोल कर खाना निकालते हैं। कुछ देर बैठते हैं जैसे उन्हें किसी का इंतजार हो। फिर जैसे ही खाने का निवाला मुंह में लेते हैं उनका गला रुंध जाता है। बस इतना ही कह पाते हैं, "देखो अनु, तुम्हारे बिना एक निवाला भी नहीं ले पाता हूँ। सोचा, तुम्हारे पास आ कर खाना खाऊँगा, शायद कुछ गले से उतर जाए। "फिर कुछ ठहर कर शायद कहना चाहते थे," तुम्हारे बिना अब जीना मुश्किल हो गया है... अब शायद जीने की कोई इच्छा बाकी नहीं रह गई। तुम्हारे पास आना चाहता हूँ। "पर यह सब कह नहीं पाए। लड़खड़ाते हुए स्वर में अनु को दिलासा देते हुए कहा, "मेरे खाने-पीने की तुम चिंता मत करना। अब तो मैं सब कुछ बना लेता हूँ। देखो न, तुम्हारे लिए क्या-क्या बना कर मैं लाया हूँ...। "कहते-कहते गला भर आया था। अपने आंसुओं को रोकने में वे असमर्थ थे।

अनु की समाधि वाले उस चबूतरे पर कुछ देर बैठे रहे। उन्होंने देखा... एक काली गाय पास के खेतों से आकर परोसे गए खाना को खाने लगती है। अनु इस गाय को रोजाना खाना खिलाती थी। अनु के जाने के बाद गाय ने भी आना बंद कर दिया था।

यह सब देखते हुए दिवाकर बाबू ने चिर-निद्रा में आँखें मूँद ली थी।

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

अमृता प्रीतम

"जहाँ भी आजाद रूह की झलक पड़े,
समझ लेना वही मेरा घर है"

अपनी इन पंक्तियों की तरह ही आजाद सोच रखने वाली पंजाबी की सबसे लोकप्रिय लेखिका – अमृता प्रीतम। अमृता का जन्म पंजाब के गुजराँवाला जिले में 31 अगस्त 1919 को हुआ। इन्हें पंजाबी भाषा की पहली कवयित्री के ख़िताब से नवाजा गया है। अमृता का नाम उन साहित्यकारों में आता है जिनकी कृतियों का अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया। आमतौर पर अमृता ने हिंदी और पंजाबी में ही लिखा है और बाद में इन कृतियों को उर्दू, सिंधी, मलयालम, मराठी, कन्नड़, बांग्ला, अंग्रेजी, बुल्गारियन आदि भाषाओं में अनूदित किया गया है।

अमृता ने कुल मिलाकर लगभग 100 पुस्तकें लिखी हैं जिनमें उनकी चर्चित आत्मकथा "रसीदी टिकट" भी शामिल है, जो छपते ही सर्वाधिक लोकप्रिय हो गई। अमृता प्रीतम को सर्वाधिक प्रख्याति उनकी प्रसिद्ध कविता "अज्ज आखां वारिस शाह नूँ" से मिली। उनकी इस कविता को न केवल भारत अपितु पाकिस्तान में भी प्रख्याति मिली। इस कविता में 1947 के भारत विभाजन के भयंकर हत्याकांडों का अत्यंत दुःखद वर्णन है। इस कविता में ऐतिहासिक मध्यकालीन पंजाबी कवि "वारिस शाह" को संबोधित करते हुए लिखा गया है। वारिस शाह से कविता आग्रह करती है कि वे अपनी कब्र में से उठें, पंजाब के गहरे दुःख दर्द को कभी न भूलने वाले छंदों में अंकित करें और पृष्ठ बदल कर इतिहास का एक नया दौर शुरू करें क्योंकि वर्तमान का दर्द सहनशक्ति से बाहर है। इस कविता की कुछ आरंभिक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

"अज्ज आखां वारिस शाह नूँ
कितों कब्रां विच्चों बोल
ते अज्ज किताब - ए - इश्क दा
कोई अगला वरका फोल
इक रोई सी धी पंजाब दी
तूँ लिख लिख मारे वैण
अज्ज लक्खां धीयां रोंदियाँ
तैनू वारिस शाह नूं कैण
उठ दर्दमंदां दे दर्देया
उठ तक्क अपना पंजाब
अज्ज बेले लाशा विछियाँ
ते लहू दी भरी चनाब"

कविता की इन पंक्तियों को पढ़कर ही पता चल जाता है कि कितना मर्म छिपा हुआ है इन पंक्तियों में और क्या हालत रही होगी उन दिनों जनजीवन की। देश विभाजन की त्रासदी का दर्द भोगते लोगों का मनोवैज्ञानिक चित्रण हो या भारतीय नारियों की बदलती हुई छवि का, उनकी रचनाओं में सारा मानव समाज व उसका दर्द बोलता है। अमृता की रचनाओं में विभाजन का दर्द और मानवीय संवेदनाओं का सटीक चित्रण हुआ है। इस संबंध में नेपाल के उपन्यासकार धूंसवां सायमी ने 1972 में लिखा था–

"मैं जब अमृता की कोई रचना पढ़ता हूँ, तब मेरी भारत विरोधी भावनाएं खत्म हो जाती हैं।"

अमृता के लेखन में कहीं भी बनावटीपन नहीं था। केवल यह कविता ही नहीं उनकी कोई भी रचना ले लीजिए सभी में सजीवता एवं सजगता का अनुभव होता है। अमृता ने अपनी रचनाओं में सामाजिक जीवन का बेबाक, यथार्थ एवं रोमांचपूर्ण वर्णन किया है। जिस भी विषय पर उनकी लेखनी चली है, उन विषयों पर उनके लेखन की गहराई एवं गंभीरता नजर आती है। उन्होनें सामाजिक मान्यताओं पर न केवल यथार्थता से लिखा है अपितु उसे तोड़ने का साहस भी किया है।

हरप्रीत कौर

पंजाबी परिवेश को दर्शाती उनकी रचनाओं का स्वर वहाँ की संस्कृति को विशिष्ट स्वर देता है। उनके काव्य संग्रहों में से 1955 में 'सुनहरे' को साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उनकी कृति "कागज ते कैनवस" (पंजाबी रचना) को 1981 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

अमृता प्रीतम ने पंजाबी की नागमणि पत्रिका का संपादन भी किया। भारत विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास पिंजर के अतिरिक्त पाँच बरस लंबी सड़क, अदालत, कोरे कागज, उन्चास दिन, सागर और सीपियाँ, दिल्ली की गलियाँ आदि शामिल हैं। देश-विदेश में सम्मानित अमृता जी को बुल्गारिया का वापत्सारोव अवॉर्ड 1979 में तथा किरितामैलोपियस अवॉर्ड 1980 में प्रदान किया गया। उनके कविता संग्रह के लिए 1997 के ओशो मिसफिर पुरस्कार के लिए भी उन्हें चुना गया। यह पुरस्कार सामाजिक मान्यताओं के प्रति विद्रोही तेवर अपनाने वालों को प्रदान किया जाता है।

पितृसत्तात्मक समाज में, परिवार के पुरुष सदस्यों पर महिलाओं की आर्थिक निर्भरता होती है, जिसकी वजह से वे अपने वजूद को पुरुषों के तले सीमित मानती थीं। अमृता प्रीतम ने समाज की नब्ज को कुशलता से पकड़ा और अपनी समस्याओं के जरिए उस जमी-जमाई सत्ता पर सेंध मारते हुए महिलाओं के मुद्दों को सामने रखा। उनके इस प्रयास को हम उनकी पिंजर, तीसरी औरत तथा तेरहवें सूरज जैसी रचनाओं में साफ देख सकते हैं।

अमृता में सार्वजनिक वर्जनाओं के विरुद्ध जो भावना थी, वह बचपन से ही उपजने लगी थी। जैसा कि वे स्वयं लिखती हैं - "सबसे पहला विद्रोह मैंनें नानी के राज में किया। देखा करती थी कि रसोई की परछत्ती पर 3 – 4 गिलास अन्य बर्तनों से हटाए हुए, सदा एक कोने में पड़े रहते थे। ये गिलास सिर्फ तब परछत्ती से उतारे जाते थे जब पिताजी के मुस्लिम दोस्त आते थे और उन्हें चाय आदि पिलानी होती थी और उसके बाद मांज-धोकर फिर वहीं रख दिए जाते थे।"

हिंदी पंजाबी लेखन में स्पष्टवादिता और विभाजन के दर्द को एक नए मुकाम पर ले जाने वाली अमृता प्रीतम ने समकालीन महिला साहित्यकारों में अपनी अलग जगह बनाई। अमृता जी ने ऐसे समय में लेखनी में स्पष्टवादिता दिखाई, जब महिलाओं के लिए समाज के हर क्षेत्र में खुलापन वर्जित था। अमृता जी की बेबाकी ने उन्हें अन्य महिला लेखिकाओं से अलग पहचान दिलाई। जिस जमाने में महिलाओं में बेबाकी कम थी। उस समय उन्होनें स्पष्टवादिता दिखाई, जो किसी आश्चर्य से कम नहीं थी।

आँचलिक कार्यालय, अमृतसर

प्रथम क्रांतिकारी महिला – मैडम कामा

दो पेड़

गाँव के सीमांत पर आमने-सामने खड़े दोनों वृक्षों की फुंगिया ऐसे मिल गई थी कि उनकी उपस्थिति गाँव के प्राकृतिक सिंह द्वार की भांति प्रतीत होती थी और दोनो वृक्ष स्वर्ग द्वार के बाहर खड़े सजग जय-विजय की भाँति प्रहरी। गाँव से गुजरने वाले पथिकों को छाया, शीतलता प्रदान कर अपने आतिथ्य भाव का परिचय भी देते थे। छोटा सा गाँव सभी संप्रदाय व जातियों का निवास। यह वह समय था जब लोगों में भाईचारा था, संबोधन में रिश्तों की गर्माहट थी, काका-काकी, भैया-बहना, दादा-दादी इत्यादि। शब्दों में सभी जातियाँ व संप्रदाय विगलित होकर एकाकार हो जाते थे। आदर, सहयोग, प्रेम जैसे संवेदनाओ से ओतप्रोत गाँव का ठाठ वैभवपूर्ण था।

दशहरे में पंडाल की सजावट का जिम्मा रसूल मियाँ का दायित्व था और रहमत अली के बजाए नगाड़ों के बीच दुर्गा सप्तशती के दिव्य मंत्र गुंजरित होते थे जो अहंकार के दानव का संहार करते थे। मोहर्रम के ताजिए के लिए त्रिभुवन सिंह और पंडित जी के बाँसवारी से चाहे जितना भी बांस काट लो। हिंदू-मुस्लिम के परस्पर सहयोग से गुंजते हुए हसन-हुसैन से कर्बला सजीव हो जाता था। परस्पर सहयोग से मनाए जाने वाले त्यौहारों का उल्लास उन पेड़ों पर भी दिखता था जो झूम-झूम कर प्रेम के ऑक्सीजन से बनी हवा का प्रवाह बहाते थे।

समृद्ध किसान अपने खेतों में काम करने वाले रैय्यत की अपरिहार्यता एवं आवश्यकता के प्रति सजग थे। उचित पारिश्रमिक और हर प्रकार के सहयोग के कारण पूंजी व श्रम का दुर्लभ संयोग था। किसान भरपूर मेहनत करते थे। अगर कहीं असमृद्धि थी तो भी मन तो तृप्त रहता था। शंकर के घर बाराती आए थे और शामियाना खुले में लगाया गया था, अचानक बारिश से परेशान बारातियों को पंडित जी के पक्के दालान में सादर आश्रय मिला और उस दिन रिपुदमन सिंह के इकलौते पुत्र अजय प्रताप सिंह उस दलदली तालाब में कमल के फूल की ओर लपके तो कुछ दलदल में फसने और जलकुम्भी में उलझने के कारण डूबने लगे। रहमत मिया नमाज से लौट रहे थे। अजय की हालत देखकर उन्होनें अपनी लुंगी खोल दी और एक सिरा अजय की ओर फेंका। फिर स्वयं कूद गए। बड़ी मशक्कत के बाद अजय को अचेतावस्था में बाहर निकाला और कंधे पर लादकर एक मील दूर स्वास्थ्य केन्द्र पहुंचे। अजय के प्राण बच गए। दोनो पेड़ हुलस-हुलस के दिन भर झूमते रहे। ये पेड़ उस गाँव की शक्ति व संगठन के प्रतीक थे और इसलिए ऐसे दृष्टांत से उनका हुलसना वाजिब था।

विजय शंकर मिश्रा

अब गाँव से शहर की ओर और शहर से गाँव की ओर लोग लॉरियों में आने जाने लगे थे। लॉरियों में यात्रियों को जानवर की तरह ठूंसा जाता था। यात्रावधि तो कम हुई लेकिन कष्ट कई गुना बढ़ गया। शहरों की हवा से इंसानियत ही पहले झ़ु ल सती है। गाँव के लड़के अध्ययन के लिए शहर गए। कुछ तो माँ सरस्वती की कृपा से अपने संस्कार व परिश्रम के सम्मिश्रण से प्रगतिगामी हुए पर वे वापस नहीं लौटे। कुछ अपने ग्रामीण संस्कारों को तिलांजली देकर शहर के प्रदुषित संस्कार लेकर लौट आए। जाहिर था कि इस प्रदूषण का प्रभाव अब गाँव की मिट्टी, पर्यावरण और रहन-सहन पर भी पड़ने लगा। कभी हंसते खिलखिलाते बच्चे किसी बुजुर्ग को देखकर शांत हो जाते थे और उनके सम्मान में एक ओर खड़े हो जाते। अब वो आदर लुप्त हो गया, बुजुर्गों की झुकी कमर और लड़खड़ाती चाल का उपहास बनाया जाने लगा। संबोधन में रिश्तों की ऊष्मा गालियों के उपसर्ग से वाष्पित हो गई। गाँव खेमों में बंट रहा था। मेहनत की चोरी कर, खेतों में चोरी करना ज्यादा सहज लगने लगा। रही सही कसर चुनावी राजनीति के भद्दे रंगों ने पूरी कर दी।

उन दोनों पेड़ों को परस्पर स्नेह से सिंचित मिट्टी मिली थी। प्रेम आदर का उर्वरक मिला था परंतु अब ईर्ष्या, संघर्ष, अहंकार का प्रदूषण मिल रहा था।

चुनाव में मतदान चल रहा था। अजय प्रताप अपने समर्थकों के साथ मतदान केन्द्र पर अपने उम्मीदवार के लिए हंगामे पर उतारू था। वृद्ध रहमत मियाँ ने अजय को समझाने के लिए उसके कंधे पर हाथ ही तो रखा था कि अजय के मित्र ने उसे भद्दी सी गाली दी और वह अजय जिसके प्राण की रक्षा के लिए रहमत ने तनिक भी विचार नहीं किया थ उसने रहमत की गर्दन पकड़कर जोर से धक्का दिया... धड़ाम। दोनो पेड़ धड़ाम से गिर पड़े। जब संगठन की शक्ति ही ऊर्जाहीन हो गई तो उसके प्रतीक को अस्तित्वविहिन होना ही था। आज वे दोनों पेड़ नहीं है।

आँचलिक कार्यालय, भोपाल

बैंकिंग और कृत्रिम बुद्धि

बंदना चौधरी

कंप्यूटर के उद्‌भव और प्रौद्योगिकी की उन्नति के साथ-साथ उद्योगों के रूप में ग्राहक की गतिविधियों में परिवर्तन हो रहा है और इसकी विस्तारित शाखा कृत्रिम बुद्धिमता (Artificial intelligence) न केवल नए युग के रूप में उभरी है, बल्कि बाज़ार में उपस्थित अन्य प्रतियोगियों में बढ़त बनाए रखने के लिए जरुरी भी है। इस तरह की प्रौद्योगिकी उन्नति में से एक है जो मैं बताना चाहती हूं कि बैंकिंग क्षेत्र में ए.आई. है। ग्राहक की खोज शुरू करने, आवश्यकता की पहचान और इस सब को पूरा करने से बैंकर की नियमित नौकरी अब ए.आई में समाहित हो गई हैं या फिर यू कहे की बैंकिंग अब ए.आई. के बिना पूरी नही हो सकती है। ए.आई. और प्रौद्योगिकी (कंप्यूटर) के माध्यम से ही ग्राहक अब वित्तीय उत्पादों के लिए आवेदन कर रहे हैं। यह पृष्ठभूमि और स्क्रीनिंग ग्राहक डेटा में चल रहे विभिन्न अनुप्रयोगों द्वारा समर्थित एक तकनीकी मंच है।

उदाहरण के लिए एक ग्राहक व्यक्तिगत ऋण के लिए आवेदन करता है और देखता है कि परिणाम क्या है, ग्राहक आय एक और अन्य वित्तीय बिंदुओं के आधार पर वित्तीय संस्थान 30 सेकंड से 1 मिनट में अपने खाते में निश्चित राशि क्रेडिट करने में सक्षम हैं, क्या यह आश्चर्यजनक है कि बहुत सारे लोग देखते हैं कि एटीएम / वेब-साइट या ऐप में दर्ज की गई यह पहली सूचना कैसे लोन लेने के लिए सहमति देती है और एक टैब / क्लिक स्पर्श पर सेट की गई विभिन्न अनुमति। बैंक डिफहाल्टर सूचियों, सिबिल, केवाईसी, पैन प्रमाणीकरण, वेतन खाता क्रेडिट, मौजूदा ऋण, क्रेडिट कार्ड से भुगतान की जाँच और पात्रता राशि की गणना करके विभिन्न बैंक ऑफिस के शाखाओ को डेटा भेजते हैं और इनका परिणाम आने में मात्र 30 सेकंड लगते हैं। और अगले 30 सेकंड के भीतर ए.आई. इन सभी प्लेटफार्मों से प्राप्त सूचना के आधार पर ऋण करते हुए स्वीकृत आवेदक के खाते में जमा करा दिया जाता है।

यह एक तरफ से ग्राहक को प्रसन्न करने वाले सभी पेपरलेस, बैंक और आवेदक के समय की बचत करता है। यह 24•7 कार्य करता रहता है जिसके परिणामस्वरूप बैंक को कार्य क्षमता और आय दोनों बढती है।

प्रौद्योगिकी के माध्यम से भी इस तरह की प्रक्रिया में किसी प्रकार की गड़बड़ी के साथ दोषपूर्ण जानकारी या कुछ सिस्टम विफलताओं के कारण भारी नुकसान हो सकता है। और साथ ही टेक्नोलॉजी हमेशा बेईमानी और पुरुषों की विफलता के अधीन है। उपरोक्त तथ्यों और उदाहरण के साथ, मैं उस दिन को महसूस करती हूं जब वो दिन दूर नहीं होंगे जब अधिकांश वित्तीय सेवाएं डिजिटल मोड में स्थानांतरित हो जाएंगी और वितरण की गति वास्तव में सबसे तेज होगी। भारत जैसे देश में इस तकनीकी क्रांति के तथ्य से रोजगार के अवसरों पर बहुत कम प्रभाव पड़ेगा।

इसका कारण यह हो सकता है कि हम अभी भी जीडीपी और जनसंख्या दोनों में बढ़ रहे हैं। इसलिए यहाँ हम कई देशों के लिए प्रसंस्करण और ए. आई. के लिए हब बन सकते हैं जैसे कोरिया आज की तारीख में उभर रहा है इसलिए नौकरियों की शैली और मांग बदल सकती है बजाय वास्तविक रोजगार संख्या घटने के।

आँचालिक कार्यालय, जयपुर

रचनाकारों से निवेदन

बैंक के प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही हिंदी गृह-पत्रिका "राजभाषा अंकुर" में प्रकाशन हेतु रचना भेजते समय कृपया अपना फोटो तथा रचना के अंत में अपना नाम, शाखा/कार्यालय का पूरा पता, मोबाइल नंबर तथा अपने बैंक का खातासंख्या (14 अंकों का) भी अवश्य लिखें। बैंक से सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य रचना भेजते समय उपरोक्त के अतिरिक्त अपने घर का पता तथा अपना पेन (PAN No.) नं. भी अवश्य भेजें।

मुख्य संपादक

विमोचन

राजभाषा अंकुर पत्रिका पर हस्ताक्षर करते हुए माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस. हरिशंकर जी।

राजभाषा अंकुर का विमोचन करते हुए बैंक के प्रबंध निदेशक एंव मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस. हरिशंकर, कार्यकारी निदेशक डॉ. फरीद अहमद, श्री गोविंद एन. डोंग्रे तथा अन्य उच्चाधिकारी गण।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन - ध्येय है

बैंक के विभिन्न उत्पाद, हर आवश्यकता के लिए

- पीएसबी अपना घर योजना
- पीएसबी अपना वाहन योजना
- देश तथा विदेश में उच्च शिक्षा के लिए पीएसबी शिक्षा ऋण योजना
- पीएसबी मॉर्गेज ऋण योजना
- पीएसबी व्यापार ऋण योजना
- पीएसबी एसएमई लिक्विड प्लस ऋण योजना
- पीएसबी कॉन्ट्रेक्टर प्लस योजना
- पीएसबी कृषि विकास मित्र योजना
- डॉक्टरों के लिए विशेष ऋण योजना
- पी एण्ड एस बैंक वाणिज्यिक वाहन योजना
- पंजाब एण्ड सिंध बैंक स्वर्ण ऋण योजना
- वेतन तथा पेंशन प्राप्त करने वालों के लिए पीएसबी व्यक्तिगत ऋण योजना
- वरिष्ठ नागरिकों के लिए सुखमनी योजना
- पीएसबी उत्कृष्ट - प्रीमियम संस्थाओं (आई.आई.एम.,आई.आई.टी तथा आई.एस.बी.(हैदराबाद) के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण ऋण योजना
- शिक्षण तथा प्रशिक्षण के लिए मॉडल ऋण योजना
- पीएसबी रेंट रिसीवेबल योजना

किसी भी योजना के अंतर्गत ऋण प्राप्त करने हेतु नज़दीकी शाखा में पधारें।